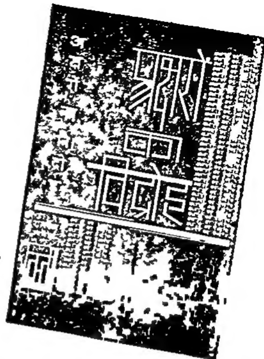
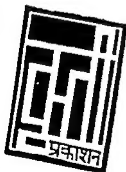


अक्षरो का विद्रोह

रामदेव आचार्य

प्राक्कथन
बालकृष्ण राव



कृती प्रकाशन
दुचीलपुरा, बीकानेर
(राजस्थान)

अक्षरों का विद्रोह

प्रथम संस्करण अगस्त 1968

प्रकाशक [illegible] प्रकाशन
कांतिपुरा बीकानेर

मुद्रक [illegible] प्रेस
बीकानेर

मूल्य [illegible].00

प्राक्कथन



ठीक से तीस वर्ष हुए जब एक दिन मेरे प्रथम कविता संकलन कौमुदी का प्राक्कथन डाक से आया था। मैंने बड़े उत्साह से लिफाफा खोला और पन्ना शुरू करने से पहले प्राक्कथन का आकार देखकर इसका अन्दाज करने की कोशिश की कि उसके लिए कितने पृष्ठों की आवश्यकता पड़ेगी। पुस्तक छप चुकी थी केवल एक फर्मा शेष था जिसमें प्राक्कथन को होना था। पण्डित श्यामबिहारी मिश्र प्राक्कथन लिखना स्वीकार चुके थे उन्हें डरते डरते दो स्मरण पत्र भेज चुका था और अंत में विवश होकर, खीझकर एक फर्मा रोककर शेष पुस्तक छपा डाली थी। जो फर्मा रोका था उसमें भी कुछ पृष्ठ अन्य उपयोगार्थ आरक्षित थे, अन्दाज से कुछ पृष्ठ प्राक्कथन के लिए छोड़े थे। भाग्य से प्राक्कथन उस छूटी हुई जगह से कुछ कम में ही आ गया इस कारण कुशल हुई। बढ़ जाता तो मुश्किल होती।

नहीं जानता इस प्राक्कथन की स्थिति क्या है। जैसे मैंने से तीस वर्ष पूर्व रावराजा रायबहादुर पण्डित श्यामबिहारी जी मिश्र के प्राक्कथन की प्रतीक्षा की थी वैसे ही रामदेव जी भी कर रहे होंगे। मैंने अपनी पुस्तक छपा डाली थी केवल एक फर्मा रोक रखा था। उन्होंने भी अपनी पुस्तक छपा डाली है और शायद एक फर्मा रोक रखा है। आशा करता हूं कि जैसे पण्डित श्यामबिहारी जी मिश्र के प्राक्कथन को उपलब्ध पृष्ठों में खपाने में मुझे कोई दिक्कत नहीं हुई वैसे ही रामदेव जी को भी न होगा। अस्तु।

पर यह साम्य यहीं तक है। अपनी पुस्तक का प्राक्कथन लिखने के लिए मैंने पण्डित श्यामबिहारी मिश्र को नहीं चुना था, न

लिखने के लिए उनसे निवेदन करने वाला ही मैं था। मिश्र जी मेरे पिताजी के मित्र थे उनके अनुरोध पर उन्होंने लिखना स्वीकार किया। यहां बात बिलकुल भिन्न है। मत जैसे अपनी जगह रामदेवजी प्राक्कथन लेखक के रूप मे मुझे चुनने के लिए उत्तरदायी हैं—भले ही सिर्फ अपने प्रति उत्तरदायी हों—वैसे ही उनका अनुरोध मानने का दायित्व मुझ पर है। मैं यह कहकर छुट्टी नहीं पा सकता कि मेरे मित्र का अनुरोध था टाल कैसे सकता था? यह तो एक ऐसे व्यक्ति का अनुरोध था जिसे मैंने देखा तक नहीं था जिससे मेरा परिचय केवल पत्रों लेखों और कविताओं तक ही सीमित था। यही नहीं प्राक्कथन लिखना स्वीकारते समय मैं यह भी नहीं कह सकता था कि मैंने उनकी लिखी इतनी कविताएं पढ़ी हैं कि विश्वासपूर्वक उनके सम्बन्ध में कुछ कह सकता हूं। इतना भी नहीं था। तब तक तो बहुत थोड़ी-सी रचनाएं ही देखी थीं विश्वासपूर्वक कुछ भी कह सकने की स्थिति में नहीं था। फिर भी मैंने रामदेव जी का अनुरोध स्वीकार किया तुरंत पहला पत्र पाते ही आसानी से स्वीकार कर लिया। क्यों?

यह एक स्वाभाविक ही नहीं आवश्यक प्रश्न है क्योंकि प्राक्कथन लेखक प्रथम आलोचक की स्थिति में होता है उसे अपने दायित्व के बोध का प्रमाण देना ही चाहिए। सतीस वर्ष पहले शायद इस क्यों के उत्तर में यह कहना ही काफी होता कि भाई क्या करता? बेचारे ने इतना इसरार भरा पत्र लिखा था कि इन्कार नहीं कर सका मगर आज यह कहना बेमानी होगा। इसलिए मैं खुद अपने से यह सवाल पूछता हूं कि मैंने इतने स्वल्प परिचय के आधार पर प्राक्कथन लिखना क्यों मंजूर किया? रामदेव जी की जितनी भी कविताएं मैंने तबतक देखी थीं उनसे आकर्षित हुआ था या आश्वस्त या केवल भविष्य की संभावनाओं के विषय में आशावान? इस रूप में इस प्रश्न का उत्तर देने की प्रक्रिया ही इस सबद का प्राक्कथन बन जाय यही इस प्रश्न की भी सार्थकता होगी और इस प्राक्कथन की भी।

रामदेव जी की कविताओं ने अपनी ओर मेरा ध्यान खींचा था। ध्यान केवल सौन्दर्य ही अपनी ओर खींच सकता हो ऐसी बात

नहीं है। बहुधा हम उसकी ओर भी बरबस आकृष्ट हो जाते हैं जो सर्वथा असुंदर है अप्रीतिकर है। ध्यान आकर्षित करने वाला गुण या तत्त्व वास्तव में विलक्षणता या असाधारणता है। इसी कारण हमारी दृष्टि अत्यंत सुंदर की ओर भी जाती है और अत्यंत असुंदर की ओर भी—भले ही हम अत्यंत सुंदर को बार-बार देखने की कोशिश करें और अत्यंत असुंदर की ओर से आँखें जबरदस्ती हटा लें। दोनों की समानता दोनों की असामान्यता में है इसी कारण दोनों आकर्षित करते हैं। रामदेव जी की कविता में मुझे आकर्षित करने वाला तत्त्व मिला और वह तत्त्व या गुण उनकी असाधारण साधारणता में झलकता था। आज कविता में ऐसी सहजता साधारणता अकृत्रिमता अलभ्य है। चाहे वह हमारा आभिजात्य का मोह हो चाहे सहसा अप्रत्याशित आचरण से चौंकाकर आकृष्ट करने का लोभ हो चाहे जो भी कारण हो हम कृत्रिमता और अलंकरण की परंपरागत अवधारणाओं के विरुद्ध विद्रोह का झंडा ऊंचा करके अपनी अनलंकृत ही अनावृत भाषा और शैली की दुहाई देते हैं पर स्वयं एक नयी कृत्रिमता के जनक और पोषक हो गये हैं। हमारी कविता रौंदी हुई राहों को छोड़कर नयी-नयी राहें ढूंढने निकालने के प्रयास में यह भुला बैठी है कि राह ढूंढने के लिए ही नहीं होती उस पर चला भी जाता है चलकर आम बना भी जाता है कहीं पहुंचा भी जाता है। भीड़ छोड़कर एकांत की तलाश में अकेलेपन की खोज में भागने वाले बस्त हो गये हर कोने में तनहाई तलाशने वालों का हुजूम इकट्ठा हो गया। नतीजा यह हुआ कि जिन्हें अपने अकेलेपन का सबसे ज्यादा एहसास है उनके साथ बहुत बड़ी भीड़ है अकेले वे हैं जो न अकेलेपन के कामी हैं न मद्दाह अकेलेपन का जो या तो एहसास ही नहीं करते या यह मानते हैं कि इस क्षण वे भले ही अकेले हों लेकिन यह स्थिति क्षणिक है वे भीड़ के हैं भीड़ के ही रहेंगे आज नहीं तो कल कल नहीं तो परसों भीड़ उन्हें और वे भीड़ को फिर पा जायेंगे। यही उनकी नियति है यही अस्तित्व की सार्थकता है।

रामदेव आचार्य इन्हीं लोगों में हैं। इन्हें भीड़ से डर नहीं लगता अपनी विशिष्टता को गवां देने की आशंका से व्याकुल नहीं है

लिखने के लिए उनसे निवेदन करने वाला ही मैं था। मित्र भी मेरे पिताजी के मित्र थे उनके अनुरोध पर उन्होंने लिखना स्वीकार किया। यहाँ बात बिल्कुल भिन्न है। एक जगे अपनी जगह रामदेवजी प्राक्कथन-लेखक के रूप में मेरे चुनाव के लिए उत्तरदायी हैं—भले ही फिर अपने प्रति उत्तरदायी हों—वैसे ही उनका अनुरोध मानने का दायित्व मुझ पर है। मैं यह कहकर छुट्टी नहीं पा सकता कि मेरे मित्र का अनुरोध था टाल कैसे सकता था? यह तो एक ऐसे व्यक्ति का अनुरोध था जिसे मैंने देखा तक नहीं था जिससे मेरा परिचय केवल पत्रों सन्देशों और कविताओं तक ही सीमित था। यही नहीं प्राक्कथन लिखना स्वीकारते समय मैं यह भी नहीं कह सकता था कि मैंने उनकी इतनी कविताएँ पढ़ी हैं कि विश्वासपूर्वक उनके सम्बन्ध में कुछ कह सकता हूँ। इतना भी नहीं था। तब तक तो बहुत थोड़ी-सी रचनाएँ ही देखी थीं विश्वासपूर्वक कुछ भी कह सकने की स्थिति में नहीं था। फिर भी मैंने रामदेव जी का अनुरोध स्वीकार किया तुरत पहला पत्र पाते ही आसानी से स्वीकार कर लिया। क्यों?

यह एक स्वाभाविक ही नहीं आवश्यक प्रश्न है क्योंकि प्राक्कथन लेखक प्रथम आलोचक की स्थिति में होता है उसे अपने दायित्व के बोध का प्रमाण देना ही चाहिए। मैं तीस वर्ष पहले शायद इस क्यों के उत्तर में यह कहना ही काफी होता कि भाई क्या करता? बेचारे ने इतना इसरार भरा पत्र लिखा था कि इनकार नहीं कर सका मगर आज यह कहना बेमानी होगा। इसलिए मैं खुद अपने से यह सवाल पूछता हूँ कि मैंने इतने स्वल्प परिचय के आधार पर प्राक्कथन लिखना क्यों मंजूर किया? रामदेव जी की जितनी भी कविताएँ मैंने तबतक देखी थीं उनसे आकर्षित हुआ था या आश्वस्त या केवल भविष्य की संभावनाओं के विषय में आशावान? इस रूप में इस प्रश्न का उत्तर देने की प्रक्रिया ही इस संग्रह का प्राक्कथन बन जाय यही इस प्रश्न की भी सार्थकता होगी और इस प्राक्कथन की भी।

रामदेव जी की कविताओं ने अपनी ओर मेरा ध्यान खींचा था। ध्यान न केवल सौन्दर्य ही अपनी ओर खींच सकता हो ऐसी बात

नहीं है। बहुधा हम उसकी ओर भी बरबस आकृष्ट हो जाते हैं जो सर्वथा असुन्दर है अप्रीतिकर है। ध्यान आकर्षित करने वाला गुण या तत्त्व वास्तव में विलक्षणता या असाधारणता है। इसी कारण हमारी दृष्टि अत्यंत सुन्दर की ओर भी जाती है और अत्यंत असुन्दर की ओर भी—भले ही हम अत्यंत सुन्दर को बार-बार देखने की कोशिश करें और अत्यंत असुन्दर की ओर से आँखें जबर्दस्ती हटा लें। दोनों की समानता दोनों की असामान्यता में है इसी कारण दोनों आकर्षित करते हैं। रामदेव जी की कविता में मुझे आकर्षित करने वाला तत्त्व मिला और वह तत्त्व या गुण उसकी असाधारण साधारणता में झलकता था। आज कविता में ऐसी सहजता साधारणता अकृत्रिमता अलभ्य है। चाहे वह हमारा आभिजात्य का मोह हो चाहे सहसा अप्रत्याशित आचरण से चौंकाकर आकृष्ट करने का लोभ हो चाहे जो भी कारण हो हम कृत्रिमता और अलंकरण की परम्परागत अवधारणाओं के विरुद्ध विद्रोह का झंडा ऊँचा करके अपना अनलंकृत ही अनावृत भाषा और शैली की दुहाई देते हैं पर स्वयं एक नयी कृत्रिमता के जनक और पोषक हो गये हैं। हमारी कविता रौंदी हुई राहों को छोड़कर नयी-नयी राहें ढूँढ़ने निकालने के प्रयास में यह भूल जाती है कि राह ढूँढ़ने के लिए ही नहीं होती उस पर चला भी जाता है चलकर आगे बढ़ा भी जाता है कहीं पहुँचा भी जाता है। भीड़ छोड़कर एकांत की तलाश में अकेलेपन की खोज में भागने वाले बहुत हो गये और कोने में तनहाई तलाशने वालों का हुजूम इकट्ठा हो गया। नतीजा यह हुआ कि जिन्हें अपने अकेलेपन का सबसे ज्यादा एहसास है उनके साथ बहुत बड़ी भीड़ है अकेले वे हैं जो न अकेलेपन के कामी हैं न मुहताज अकेलेपन का जो या तो एहसास ही नहीं करते या यह मानते हैं कि इस क्षण वे भले ही अकेले हों लेकिन यह स्थिति क्षणिक है वे भीड़ के हैं भीड़ के हो रहेंगे आज नहीं तो कल कल नहीं तो परसों भीड़ वहीं और वे भीड़ को फिर पा जायेंगे। यही उनकी नियति है यही अस्तित्व की सार्थकता है।

रामदेव आचार्य इन्हीं लोगों में हैं। इन्हें भीड़ से डर नहीं लगता अपना विशिष्टता को गवाँ देने की आशंका से व्याकुल नहीं हैं

भीड़ म गो जाने के भय से रात भर जागत नहीं रहते । निजिन्ता म आग्रह और अनूठेपन के लोभ म सर्जनात्मकता का वरण करने की तथाकथित आधुनिक प्रवृत्ति इनकी रचनाओं म परिलक्षित नहीं होती । इसी कारण इनकी रचना साधारणता का वरण करती है अत असाधारण हो जाती है । इनका विद्रोह साधारण का विद्रोह है असाधारण के आतंक के विरुद्ध । इनकी कविता परिवेश म व्याप्त कृत्रिमता की घुटन के विरुद्ध सोन्मत्त और व्यक्ति की सहज प्रतिक्रिया है । यह विद्रोह निरुद्देश्य, निरर्थक विद्रोह नहीं है सकारण है अत सार्थक है साधार है धर्म सक्षम है। इस साधारणता की अपनी सीमाएं हैं जिन का वह अतिक्रमण नहीं कर पाता । रामदेव आचार्य काव्य की सीमाएं है । भाषा या यों कहूं इनकी काव्य-भाषा यदि इस साधारणता का शक्ति है तो व्यंजकता का अभाव इसकी सीमा है । कृत्रिमता का अभाव यदि गुण है तो दूसरी ओर विद्रूप हो सपाट अभिप्रायक होती गया है । रामदेव आचार्य की कविता म उनके कथ्य म और उनके शिल्प म नितांत स्वच्छ सहज साधारणता अपने समस्त गुण दोषों के साथ परिलक्षित होती है । यदि एक ओर 'नव रूप पर नया कविता है जिसकी भाषा अनुभूति की आत्यंतिकता स अनायास ही प्रखर हो उठी है कथ्य और शिल्प एक दूसरे के पर्याय और पूरक हो गये हैं कलात्मक और क्षणिक सार्वजनीन और सार्वकालिक हो गया है तो दूसरी ओर वे रचनाएं हैं जो कवन कथन करती भर हैं अनुभव नहीं कराती । कवित्व से अधिक ऐसी कविताएं वक्तृत्व का उदाहरण प्रस्तुत करती हैं । संग्रह म ऐसी एक स अधिक रचनाएं हैं पर उनके नामों की सूची न दूंगा । हर्ष की बात यह है कि इन रचनाओं म भी जिनमें कवित्व कम वक्तृत्व अधिक मिलता है कवि का मन ईमानदार असंदिग्ध रहा है । भाषा के प्रति सतर्कता कवि के दायित्व बोध का प्रमाण है । रामदेव आचार्य इस कसौटी पर खरे उतरते हैं । वे कहीं भी न धोखा खाते नजर आते हैं न धोखा देने की कोशिश करते । जिन रचनाओं म कवित्व की जगह वक्तृत्व का सरसाम मिलता है उनम भी कभी यह नहीं लगता कि कवि ने केवल प्रभावित अथवा अभिभूत करने के लिए शब्दों का प्रयोग किया है। इस संयम के पीछे भाषा और भावक के प्रति जो आदर परिलक्षित

होता है वह कवि की निर्भ्रांत दृष्टि का प्रमाण और परिणाम ही है। उसकी दृष्टि किसी प्रकार के रूमानी मायाजाल म फसती भटकती नही अपने स्व को अपने परिवेश को, यथाय को पहचानती है और जसा पाती है वसा ही स्वीकारती है। न यथाय की कमिया और बुराइयो पर पर्दा टालने की कोशिश करती है न काल्पनिक सौन्दय सष्टि को आत्म का मानचित्र समझने की भूल करती है। यह अनाविल है और स्वस्थ सस्पष्ट है, क्योकि उसने नि सकोच अपनी सहजता साधारणता का वरण किया है। वड स्वथ की यह सीख मानो रामदेव आचाय ने आत्म वाक्य के रूप म ग्रहण कर ली है

इफ दाउ इडीड डिराइव दाइ लाइट फ्रॉम हेवन
देन टु द मजर आफ दट हेवनवान लाइट,
शाइन पोएट इन दाइ प्लेस—एँड बी कटेंट।

अपने कवि-कम रा कवि के रूप म अपनी स्थिति और नियति से रामदेव आचाय कटेंट हैं भले ही परिवेश म व्याप्त अशिवता के विरुद्ध उनका भावुक मन विद्रोही हो गया हो।

रामदेव आचाय का स्वर एक आस्थावान आदशवादी का है जो दुनिया को रहने योग्य और जि दगी को जीने योग्य मानता है। वतमान को अतीत से बड़ा मानता है क्योकि उसका विश्वास है कि भविष्य वतमान से बड़ा होगा होना चाहिए। यदि हम आग बढ रह हैं तो निश्चय है आज जहा हैं कल वहा स बहुत पीछे थे और कल बहुत आगे होंगे। इस आस्था के साथ आज की चारों ओर सुन पडन वाल निराशा सत्रास और पराजय के हाहाकार की सगति नहा बनती। कवि को यह ज्ञात है पर वह अकेलापन महसूस न ो करता क्योकि वह जानता है कि अतत हाहाकार करने वाला निराशावादी भी उसके साथ ही होगा क्योकि वह भी मनुष्य है साधारण मनुष्य है और मनुष्य की साधारणता ही उसकी अजेय आशावादिता है। कवि की दृष्टि परिवेश को ऊपरी सतह तक ही जाती जो यह केवल दुख और व ही देख पाता हो पर वह जो कुछ देखता है वह गहराई स देखता है। गहराइ स देखने के लिए पर्तें उतारना

जरूरी नहीं है। गहराई की पता या देखने की प्रक्रिया में नहीं देखने वाली दृष्टि से होती है।

कवि की व्याख्यात्मक कविताओं में मुझे ... नहीं हुआ ... सी लगी। यहाँ कहीं कि ... का स्वर भी इतना ... हुआ लगा कि कविता विचार की जगह बयान ... विरोध की लगी। कहीं ... गढ़े जैसे ईमानदार और ईमान ... । ... जो ईमान ... है उसे इसका एहसास हो गया कि यह ईमानदारी से बात कह रहा है? बात कह रहा है इतना ही काफी है? ईमानदारी ... होती ही। एक ... और ... है ... । (भला इसका क्या अर्थ हुआ?)

पर जो नया कवि हर नये युग पर ... यह ... समय की ... ईमानदार प्रणयशील और ... रात में गाय जगी उत्कृष्ट कविताएँ ... गया है उसकी ... (इसका अर्थ जो भी हो) ध्यान आकृष्ट नहीं कर सकता। जिस कलम से ये पंक्तियाँ निकलीं

पत्तों से टकराकर लड़खड़ाती
बावरी हवा
व्यापक क्षेत्र में
समाधि लगाये विचार-मग्न प्रकृति
यदा-कदा टूटता तारा
और वातावरण की गुमसुम चुप्पी,
और मेरे मन पर
बनते बिगड़ते
अनेक ताल चित्र !

उससे हिन्दी को बहुत-कुछ आशा अपेक्षा करने का अधिकार है।

अमरावती
१५ टैगोरनगर
इलाहाबाद
२७ ७ १९६८

बालकृष्ण राव

अनुक्रम

उजागर क्षणों की कविताएं

लम्बी कविताए

अतिम पृष्ट

उजागर क्षणो की कविताए

अक्षरों का विद्रोह



अक्षरों ने मुझसे कहा—
हमें गलत साँचों में फिट मत करो ।

शब्दों ने मुझसे कहा—
हमें उधार लिए फ्रेमों में मत जड़ो ।

ध्वनियों ने मुझसे कहा—
हमारा संगीत मत छीनो ।

अर्थों ने मुझसे कहा—
हमें नंगा मत करो ।

गीतों ने मुझसे कहा—
हमारी राग मत लूटो ।

लय ने मुझसे कहा—
मेरी गति मत तोड़ो ।

कविता ने मुझसे कहा—
मेरा दर्द मत छीनो ।

संवेदना ने मुझसे कहा—
मेरा क्रय-विक्रय मत करो ।

अंत में उन सबने मिलकर
एक विचार गोष्ठी की
और एक स्वर में
मेरी—
कवि की—
सत्ता के विरुद्ध
विद्रोह कर दिया ।



दो प्रतिक्रियाएँ



सड़क के किनारे गन्दे
भूखी देहवाले
उस भिखारी बालक ने
मिमियाते हुए
पैसे माँगने के लिए
मेरे सामने जब हाथ फैलाया
तो मुझ पर एक साथ
दो प्रतिक्रियाएँ हुईं—

एक

मिमियाता हुआ वह भिखारी बालक
मुझे अपना बच्चा लगा।
मेरा बच्चा भिखारी हो गया है!

दो

भूखी देहवाला वह भिखारी बालक
मुझे सिमटा हुआ
एक प्रश्न चिह्न लगा
और मेरी इच्छा हुई
कि बिठा दूँ इस प्रश्न चिह्न को
योजनाओं के आँकड़ों पर
समृद्धि के नक्शों पर
नेताओं के ओजस्वी भाषणों पर
तथा
संसद और विधान सभाओं पर!



प्रजातन्त्र का गीत



एक स्वस्थ व सुन्दर घोड़े पर
आसन जमाये
जब एक कुरूप गधे ने
घोड़े पर चाबुक चलायी
तो घोड़ा तिलमिला उठा।

बोला—
ओ रे मनोहारी गर्दभराज!
क्या खूब तुम्हारे भाग्य
कि हम पर तुम असवार!

घोड़े की गरदन पर
पान की पीक थूकते हुए
गधे ने जवाब दिया—

ओ रे भोले जीव!
यह नहीं भाग्य का दान
यह है प्रजातन्त्र का गान—
कि घोड़े टापें खायें
और गधे चबायें पान!



मसीहा

•

मसीहा होते हैं वे
जो खुद को मसीहा कहते नहीं
ममयत हैं।

उन्हें मसीहा बनने के लिए
उनके साथ एक जत्था चलता है
जत्थे के सभी लोग

स्वार्थी
कमाने
या मूर्ख होते हैं।

मसीहा देते है उपदेश
तो लोग ऊंघते है
पर जत्थेवाले कहते हैं
कि लोग झूमते है।

न कुछ विषय पर
मसीहा घंटा बोलते है
भारी भारी परिभाषाओं के
लात खोलते है।

नहीं समझ पाते साधारण लोग
जत्थेवाले समझाते है
(कन्फ्यूज्ड) मसीहाओं को समझ पाना
टेढ़ा खीर बताते है।

मसीहा के विचारों को
नयी नयी शैलियों में ढालते है
जो स्वयं मसीहा नहीं समझा पाये
ऐसे ऐसे गूढ़ अर्थों पर
जत्थेवाले प्रकाश डालते है।

सुना है आदि-काल मे
सभी मसीहा जत्थे पालत हैं,
जत्थेवालो क पट म अनाज
और लोगो की आखो म
धूल डालत हैं।



आदमी



मैं कोई वाहन तो नहीं हूं
कि जब चाहा तब सवारी कर ली
मैं कोई चादर तो नहीं हूं
कि जब चाहा तब बिछा ली
जब चाहा तब ओढ़ ली
मैं कोई कपड़े का थान तो नहीं हूं
कि मर्जी आये जिस साइज में काटकर
चोले या लम्बे कुर्तों के लिए
मेरा काट बना दो

मैं कुछ और हूं
मैं आदमी हूं!



पीडा वैयक्तिक



तुम्हे मैं बीमार लगता हू
तो ठीक ही तो है
पर तुम क्यो जानना चाहते हो
मेरे सन्दर्भो का इतिहास ?

मेरी वेदना कोई पेम्फलेट तो नही है
कि बाट दू
हर सडक पर चौराहे पर !
मेरा दर्द कोई पोस्टर तो नही है
कि चिपका दू
हर मोड पर दीवार पर !

तुम तुम अपने स्वास्थ्य को जियो,
और मुझे मेरी बीमारी को जीने दो !



एक ईमानदार कविता



मेरे लिए नारी सीता नहीं
मुझे नहीं लेनी उसकी अग्नि-परीक्षा !

मेरे लिए नारी द्रौपदी नहीं
मुझे नहीं करना उसे भरी महफ़िल में नंगा !

मैं नहीं कहता उसे देवी या पतिव्रता
मुझे नहीं बनाना उसे मार मार कर गना !

यह सब तो
मैं धर्म ग्रन्थों के लिए छोड़ता हूँ ।

मेरे लिए नारी केवल प्रेमिका है
जिसका सारा जिस्म
मेरे सारे जिस्म में उतर आता है ।



एक ईमानदार प्रणय-गीत



यहा आओ
और रख दो मेरे होठो पर
अपने दहकते गुलाब
भर दो मेरी बाहो मे
अपनी देह के अगार
धधका दो मेरी धमनियो मे
ज्वालामुखी लपट,
मेरी नस-नस म डाल दो तेजाब,
अपनी जुल्फो मे कहा—
मुझे डस ले सौ बार
आज की रात तो
हो जाने दो मेरी मौत
बनने दो चाद को
इस हसीन मौत का गवाह

मेरे खून को खून की प्यास है
मेरी देह को देह की भूख है।



एक ईमानदार कविता



मेरे लिए नारी सीता नहीं
मुझे नहीं लेना उसकी अग्नि-परीक्षा !

मेरे लिए नारी द्रौपदी नहीं
मुझे नहीं करना उसे भरी महफ़िल में नंगा !

मैं नहीं चाहता उसे देवी या पतिव्रता
मुझे नहीं बनाना उसे मार मार कर सती !

यह सब तो
मैं धर्म ग्रंथों के लिए छोड़ता हूँ ।

मेरे लिए नारी केवल प्रेमिका है
जिसका सारा जिस्म
मेरे सारे जिस्म में उतर आता है ।



एक ईमानदार प्रणय-गीत



यहा आओ
और रख दो मेरे होठो पर
अपने दहकते गुलाब,
भर दो मेरी बाहो मे
अपनी देह के अगारे,
धधका दो मेरी धमनियो म
ज्वालामुखी लपटें,
मेरी नस-नस मे डाल दो तेजाब,
अपनी जुल्फो मे कहो—
मुझे डस ले सौ बार,
आज की रात तो
हो जाने दो मेरी मौत,
बनने दो चाद को
इस हसीन मौत का गवाह

मेरे खून को खून की प्यास है
मेरी देह को देह की भूख है।



टूटन का गीत



सूनी वादी म गूज रही
खण्डित आदर्शों की ध्वनिया
रगिस्ताना की परता म
दब गया कल्पना की परिया
बन गयी राख का एक ढेर
अभिलाषाओ की फुलझडिया
एकाता का है भुगत रही
रगीन जिन्दगी की घडिया
जिनको समझा मुक्तामणिया
व निकली आसू की लडिया
जुडना था जिनको सूत्र बद्ध
व कटी साधना की कडिया
चेतन पथ पर है भटक रही
सब प्रश्ना की अस्वीकृतिया
सपनो की नगरी म उभरी
है खण्डहरा की आकृतिया ।



यदि कविता पास नहीं होती



यदि कविता पास नहीं होती
तो जग अधूरा रह जाता!

पीड़ा अनगायी रह जाती
टूटन अनव्याही रह जाती,
चित्रा में रंग नहीं भरता,
सपना का सत्य नहीं मिलता।

अनगढ रह जाती अभिलाषा,
अनपढ रहता मन का चिन्तन,
हर विरह अकाला मर जाता,
लय-हीन पड़ी रहती धड़कन।

बिन पाये अर्थ अश्रु दृग का
माटी में ढल कर वह जाता।

तन का मन का यह बोझिल श्रम
बोझिल का बोझिल रह जाता
यह घुटा घुटा अस्तित्व नहीं
अपना संवेदन कह पाता।

हर मिलन मूक ही मर जाता
हर प्रणय अगाया रह जाता
माध्यम बिन मंजिल रह जाती
हर गीत अजाया रह जाता।

जीवित रहने की मजबूरी
कैसे यह जीवन सह पाता?



विद्रूपता



सभी राक्षस
राम भक्त हो गय है
सभी निकम्मे
व्यस्त हो गय हैं
सभी मूर्ख
कुर्सिया स चिपक गय है
सभी विभीषण
नेता बन गय है
सभी तोते और मैना
राम राम रट कर
शिक्षक हो गय हैं
सभी काले चेहरो पर
पाउडर पुत गया है
सभी गधो को
तानसेन मान लिया गया है
आओ
दफना द बचे-खुचे यथार्थों को
सच्चाई को दे द देश निकाला !



प्रोफेसर



दूसरो के दिमागो में
ढले हुए हमारे दिमाग
ढालते रहते हैं दूसरे दिमागो को
अपने साचो में !

दिमाग ढालने की हम मशीनें !

हमारे रंग बिरंगे उपदेश
बन जाते चंद सिक्के
लद जाते हमारी बौद्धिक देह (!) पर
सूट और बूट,
हमारी योग्यता के
बाहरी प्रतीक,
हाथी के दात !

एक-दूसरे से
बड़ा कहलाने की होड में
लगाते हैं हम दाव पेच
उछालते हैं कीचड
दिखाते हैं कलाबाजिया
मदारी के रीछ सी !

बौद्धिकता के हम मार्तण्ड (!)
बंद रहते
अर्थहीन ईर्ष्याओ की
अंध गुफाओ में !
हमारे द्वारा ढाले गये दिमागो से
कतराता हमारा ईमान

अपमानित होती रहेंगी प्रतिमाएं
आत्माएं बन जाती रहेंगी गमगीन
और हम हँस-हँस कर
बत्तीसी दिखाते रहेंगे
हमारे विदूषक व्यक्तित्व !
•

दो सपाट कविताएं

१ दृष्टि-भेद



बहुत अधिक
बोलनेवालों की सभा में
एक व्यक्ति
बिलकुल मौन बैठा था।
सभा समाप्त होने पर
सबसे अधिक बोलनेवाले व्यक्ति ने
मौन व्यक्ति से पूछा—
'तुम बिलकुल नहीं बोलते
क्या तुम गूँगे हो?

मौन व्यक्ति ने
पहली बार ज़ुबान खोली—
सभी मूरख
मुझे गूंगा समझते हैं।'



२ विवशता



सोचा था यह
कि साथी हैं वे
सो हम निभा ही लेंगे

पर हुआ यह
कि साथी थे वे
इसलिए हम ही उनका निभाना पड़ा।



चांदनी रात में गांव



मिट्टी क घरा की वाहो म
करवट बदलता गांव
स्नेही आकाश पिता क
सीने म छिपाए
नन्हे शिशु सा चांद

मिट्टी क घरा की छतों म
पेडो की शाखा तक
झूलती झूमती
छलांग लगाती
लुकती छिपती चांदनी।

यह रात
कि जैसे किसी कुशल चित्रकार ने
पोत दी है मटमैले रंगो म
एक गौरवर्ण गृहिणी की आकृति
अधुले वस्त्रो म।

पत्तो स टकराकर लडखडाती
शराबी हवा
व्यापक क्षेत्र म
समाधि लगाये विचार मग्न प्रकृति
यदा कदा टूटता तारा
और वातावरण की गुमसुम चुप्पी

और मेरे मन पर
बनते बिगडते
अनेक तल चित्र।



समय : दो अनुभूतियाँ



१ समय की स्तब्धता

सोयी हुई जवान औरत की तरह
सोया हुआ यह समय।
एक मील लम्बी
थमी हुई गुड्स ट्रेन की तरह
जाम हुआ यह समय।
काश मैं इसे समेट सकूँ!
मैं इसे धकेल सकूँ।

हिमालय पर जमी बर्फ सा
जमा हुआ यह समय।
आकाश की तरह
स्थिर और अनंत यह समय।
काश, मैं इसे पिघला सकूँ!
मैं इसे हिला सकूँ।



२ समय की गतिशीलता

किसी अंतरिक्ष यान की तरह
भागता हुआ यह समय।
किसी सुपरसोनिक जेट की तरह
धुएँ की लकीरें छोड़ता हुआ यह समय।
काश, मैं इसके पंख पकड़ पाता।
मैं इसके मशीनी गियरों को जकड़ पाता।

अतृप्त प्रतिध्वनियाँ पुकारती हैं

कामना की नावें सूनी पड़ी हैं
काश मैं समय को रोक पाता ।
मैं क्षणों को बाँध पाता ।

•

तीन समानताएं



जैसे हाई तेज स्पीड से भागती हुई मोटर
जैसे ऐसी मोटर के पहियों में
फंसकर कुचला गया कबूतर
जैसे कबूतर के लोथड़े पर
अपनी समझदार गर्दन उठाये
कुंठित कौए—

वैसी ही यह आधुनिकता!
वैसा ही यह परिवेश!!
वैसे ही ये सभ्य लोग!!!



गोली-काड लाठी-चार्ज ।



गोलियो की बौछार म
छलनी हुए वक्ष क लिए
मेरा वक्ष अकुलाता है

मुक्ति मघप म गिरा
खून की हर बूद क लिए
मेरा खून गरमाता है

अश्रु गस स निकाले गय
हर आसू क लिए
मेरा दृग पिघल जाता है

लाठी चाज द्वारा
पीठ पर बने हर निशान क लिए
मेरा बदन भनभनाता है

भूख क नाम पर
हथकडी पहननवाले क साथ
मेरा हाथ बध जाता है

यह कवि का सत्य है
राजनता का सत्य नही ।
व्यवसायी वक्ता का सत्य नही ।।



गो-भक्त के आमरण अनशन पर



गाय के नाम पर
आत्माहुति देने वाले ओ शहीद !
मुझे तुम पर गुस्सा नहीं
तरस आता है
यह सोचकर कि आज भी आदमी
आदमी को छोड़कर
पशु रक्षा के गीत गाता है
अपनी बलि चढ़ाता है !

तेरी मौत से मुझे कोई सहानुभूति नहीं
क्योंकि तेरी मौत मेरी मौत नहीं
रूढ़ि की मौत है
प्रतिक्रिया की मौत है
संस्कार की मौत है ।

तेरी मौत पर फिर भी
मुझे दया आती है
मेरी आत्मा तिलमिलाती है
क्योंकि तुम आदमी हो
और हर आदमी की मौत
हर आदमी की मौत
के समान होती है ।

दर्द होता है यह जानकर
कि आदमी को मरने की छूट है,
कि आत्म-हत्या करने की छूट है !

देश में प्रजातंत्र है
इसलिए जीने मरने को व्यक्ति स्वतंत्र है ।



आओ, मेरे साथ आओ !



आओ मेरे साथ आओ
कुछ मूर्तियों को तोड़ना है
कुछ प्रतिमाओं को खण्डित करना है
जिन्होंने हमें भीगी बिल्लियाँ बना दिया है।

आओ मेरे साथ आओ
कुछ देवताओं को अस्वीकारना है
कुछ धर्मों को नकारना है
जिन्होंने आदमी को जानवर बना दिया है।

आओ मेरे साथ आओ
कुछ परकोटों को मिटाना है
कुछ स्तम्भों को गिराना है
जिन्होंने हमारी प्रतिभा को कुण्ठित कर दिया है।

आओ मेरे साथ आओ
कुछ खाइयों को पाटना है
कुछ साँकलों को काटना है
जिन्होंने समूचे राष्ट्र को नपुंसक बना दिया है।

आओ मेरे साथ आओ
कुछ संस्कारों को जलाना है
कुछ विश्वासों को हिलाना है
जिन्होंने हमारी आत्माओं को नंगा कर दिया है।

आओ मेरे साथ आओ
कुछ पंजों को मोड़ना है
कुछ जबड़ों को तोड़ना है
जो हमें ज़िन्दा निगलने की साजिश कर रहे हैं।
आओ मेरे साथ आओ।



मैं हू भीड का एक स्वर !



मैं हू भीड का एक स्वर
मैं हू नदी की लघु बूद
मैं नभ-गगा का एक दीप !

मुझे समूह से मत छीनो।
मुझे प्रवाह से मत काटो।
मुझे आकाश से मत समेटो।

सम्मान दो उन्हे
जो भीड से बडे है
जो भीड को भेड कहते हैं।

प्रतिष्ठा दो उन्हे
जो सिंहासनो से चिपके है,
जिन्हे सिंहासनो से बेहद इश्क है।

प्रशस्तिया उनको करो अर्पित
जिन पर विशिष्ट होने का बोझ है
जो छाती तानकर बोझ ढोते है।

मेरी लघु इकाई को
हथकडियो से मुक्त रहने दो।
मुझसे मेरा छोटापन मत छीनो।
मुझे बस वही रहने दो
जहा मैं हूँ—
मैं हू भीड का एक स्वर,
मैं हूँ नदी की लघु बूद
मैं नभ गगा का एक दीप !



मैं और मेरी पीडा

मुझमे ऐसा क्या है
कि मैं टूटता नही हू
मैं बिखरता नही हू ।

चोट सहता हू अनेक
हर चाट खाकर तिलमिलाता हू
घायल हो जाता हू
पर मेरी पीडा
कभी भी आत्म हत्या की
प्रेरणा नही बनती
मृत्यु का आ द नहीं बनती ।

मै घावो को सहला लेता हू
मरहम पट्टी कर लेता हू
फिर स्वस्थ होकर
नये सिर से
जीवन को पकडने के लिए
चल पडता हू ।

फिर जब अपने चारो ओर देखता हू
तो पाता हू
कि मुझ पर पडी प्रत्येक चोट
स्वय टूट गयी है
बिखर गयी है ।

●

चक्रव्यूह



मेरे देशवासियों ने
केवल यथार्थों को
जीना सीखा है।
सम्भावनाओं को जीना
वे नहीं जानते।
सम्भावनाएँ
यथार्थों में बड़ी होती हैं।
जिस दिन मेरे देशवासी
सम्भावनाओं को जीना सीख लेंगे—
उस दिन
जीना सीख लेंगे।



औपचारिक हसी



आज मैं एक खोखली हसी हसा,
एक औपचारिक हसा हमा
एक शिष्ट हसी हसा ।

किसी परिचित ने कुछ कहा
जिसके उत्तर म हसना था
सब हस थे
मुझे भी शिष्टाचार वश हसना था
तब मैं खोखली हसी हसा,
औपचारिक हमी हसा
सभ्य हमी हसा
सुसस्कृत हसी हसा।

मरी इस हसी ने
वहारें नही बुलायी
ओस क मोती नही लुटाय,
गुलाब की महक नही बिखेरी
बिजली की कौध नही फेंकी
इद्रधनुषी रग नही ढलकाये ।

इस हसी ने
मेरे अनेक रोमा म स
एक रोम का भी स्पश नही किया
इसने मेरे दिल की
अनेक धडकनो मे स
एक भी धडकन को नही छुआ ।



जीने का अंदाज़ ।

•

मुझे वे सब बेईमान पसंद हैं
जो खुले दिल से बेईमान हैं
जिनकी बेईमानी सीना तानकर चलती है ।

मुझे उन बेईमानों से घृणा है
जिनकी बेईमानी
एक खूबसूरत नकाब में सजा फरेब है ।

मुझे वे ईमानदार मूर्ख लगते हैं
जिनकी ईमानदारी एक लाउड-स्पीकर है ।

वे ईमानदार कायर हैं झूठे हैं
जो ईमानदारी की सज़ा भुगतकर
रोते हैं पछताते हैं ।

वे लोग बृहन्नला के वंशज हैं
जो न बेईमान हैं
न ईमानदार
ये मध्यम-मार्गी लोग स्वार्थी हैं कमीन हैं ।

ज़िन्दगी दो ही तरीकों से जी जा सकती है—
खुली बेईमानी में
या गंभीर ईमानदारी में—
दोनों का जीने का
एक निराला अंदाज़ होना है ।

•

एक तुक्तक

•

[सन्दर्भ : अज्ञेय जी की अध्यक्षता में नवगीत नयी कविता गोष्ठी १९ २ तथा २१ फरवरी १९६६ को बीकानेर में आयोजित हुई थी। उसमें पढ़े गये कुछ विद्वानों के निबंधों में इतना उलझाव तथा भटकाव था कि श्रोताओं को अनेक बार माथा हाथ थामना पड़ा। अज्ञेय जी को छोड़कर शेष सभी वक्ता अज्ञेय थे। अक्षय चन्द्र शर्मा ने परम्परा और कवि पर एक सशक्त भाषण दिया था। अन्य मुख्य वक्ताओं में श्री विद्यानिवास मिश्र, श्री सर्वेश्वरदयाल सक्सेना तथा श्री रघुवीर सहाय थे।]

यह तो समझ में आ गया क्या क्या हमारे ध्येय थे
कुछ श्रेष्ठ पुरुषों के वचन हर बार से दुर्भेद्य थे
अक्षय समझ में आ गये
फिर मात हम तो खा गये
अज्ञेय जी तो ज्ञेय थे बाकी सभी अज्ञेय थे।

तुम मुझे जीनियस कहो
और मैं तुम्हें मसीहा
तुम करो मेरा अभिनन्दन
और मैं करूँ तुम्हारा अभिषेक।
गिरोह निभा रहा है अयोग्यताएँ
ऐसे में जुट रहे हैं काबिल लोग!

नये वर्ष पर



लो चला गया
एक और वर्ष !
रह गया मैं
वही का वही
कुछ परिचयों का जोड़ता
कुछ यादों को तोड़ता !

पड़ाव की खोज में
यात्राएं शिथिल हैं
शब्द-हीन अनुभूतियां
पीछे छूटती हैं
मेरी एक और प्रतिमा
हर वर्ष टूटती है !



कागज के जहाज



सपनों के सागर पर
तैर थे मन्सूबों के जहाज ।
आदर्शों की भूमि पर
उभरे थे कल्पनाओं के राजमहल ।

क्या पता था कि मेरी दुर्बलताएं
मेरी विवशताएं होंगी
सागर पर तैरते जहाज
कागजी होंगे
तथा राजमहलों की नींवों में
रेत भरी होगी ।

जो शेष बचा है,
वह है एक विराट शून्य,
जिसके नंगे यथार्थ को
जन्मा है मेरी दीनताओं ने
मेरी हीनताओं ने ।



कोई गीत नहीं जनमा !



जब तक साथ रही तुम मेरे [illegible] [illegible] नहीं जनमा
जब तक पास रही तुम मेरे कोई गान नहीं जनमा !

गीत जनमता है पीड़ा की
भट्ठी में गलकर तपकर
छन्द उमड़ते हैं नयनों से
मथा में घुल कर ढल कर !

विरहा की बिजली में दमकी
करती है मन की कविता
सूनेपन की मुक्त पहाड़ी
से बहती लय की सरिता।

जब तक साथ रही तुम मेरे कोई दर्द नहीं ठहरा
कितनी ऋतुएं आयी लौटीं कोई फूल नहीं महका।

यह एकाकीपन कितना अब
उवर बनकर लहराता
हर वसंत [illegible] रंगता है
पावस कविता कह जाता।

शिशिर सिखाता नये नये स्वर,
ग्रीष्म सौंपता है छवियां,
पतझड़ नये अर्थ देता है
मुखर स्वयं होती ध्वनियां

जब तक पास रही तुम मेरे कोई भाव नहीं बहका,
कितने [illegible] सुने या बोले कोई मौन नहीं चहका !





मत बहने दो कजरायी पलकों से ये पीराए जर्द
मुझे ताडन को काफी है, मेरे आसू, मेरे दर्द !

मुझे उम्र दो, एक हंसी ही मेरी झोली में डालो,
मुझे प्रभा दो, मेरे मुख की स्याही जरा पोछ डालो
यदि आसू द्राय तो कल का सपना भी लुट जायगा
तुमने मुस्काना छोड़ा तो फिर भविष्य घुट जायेगा।

श्यामानी की दवेन पपड़िया मत जमने दो मुख पर मद
मुझे ताडन को काफी है मेरे आसू, मेरे दर्द।

झुकी पराजय के समीर को मत सासो मे बहने दो
मूक व्यथा को इन आखो मे आत्म-कथा मत कहने दो
धोखा तो आखो नयनो मे इतना छल करना होगा
वर्ना जीवन का मतलब ही जीते जी मरना होगा !

सूनेपन मे घिरी आस्था की झड़ता जाती है गर्द
मुझे ताडन को काफी हैं मेरे आसू, मेरे दर्द !



खण्डित आदर्शों का गीत



[कथ्य की टूटन छन्द की टूटन में अभिव्यक्त
एक शिल्पिक प्रयोग]

जिन्दगी कवल अपाहिज है
कि जिसकी
करवट सब मर गयी मर लिए
सड गय सारे गुलाब मर लिए !
टूटन सभी मर लिए !
विघटन सभी मरे लिए !

मै कौन हू क्या हू—
सभी य प्रश्न है भंझट
अस्तित्व क सब रग
अब तो हो गय बदरग
हो गय बजर यहा
सब खेत सपनो क
हो गय वीरान सारे
दृष्टियो के बाग
हौसलो को खा गयी
सम्भावनाए

हो गयी मातम सभी
शहनाइया मेरे लिए
रिक्तताओ म बचा
सगीत है मर लिए !
टूटन सभी मरे लिए
विघटन सभी मरे लिए ।

मर चरणो को खाज
रही है क्षितिजो की
सारी दुनिया बन गया

अपरिचित महिलाएं
जीवन की पथरीली राहों पर
बस एक पड़ भी नहीं मिला
मिल गयी
औपचारिकता जुड़ी मित्रता से
मुझको घेरा
मेरी खामोश इकाई ने
अपने भीतर
सुनता हूँ टूटी आवाज़ें

दर्द अब
केवल मनुस्तम गीत है मेरे लिए !
हर तरफ करती प्रतीक्षा
उदासियां मेरे लिए !
टूटन सभी मेरे लिए।
विघटन सभी मेरे लिए।

झुक रहे बोध के
पर्वत हैं मेरे मन पर
हर चौराहे पर मिली मुझे
असफलताएं,
मेरे गीतों को रौंद दिया
मेरे अपने परिवेशों ने
हर तरफ खोजती फिरती
मुझको ऊब, घुटन
जीवन की रौनक
चरती रहीं व्यवस्थाएं
मासूम मिली आंखें मुझको,
जिनमें काजल की नहीं रेख
नन्हे अंकुर ऐसे देखे
जिनसे सूरज ने किया वैर

विद्ध रहे हर दिशा म
अब घुमाव हैं मरे लिए।
हो गये अंधे सभी
दिन रात हैं मेरे लिए।
टूटन सभी मरे लिए।
विघटन सभी मरे लिए।

जिन्दगी केवल अपाहिज है
कि जिसकी
करवट सब मर गयी मर लिए।
●

अपने मित्रों के लिए



कितने बड़े बड़े
कालजयी योद्धा
अमोघ अस्त्र-शस्त्र लिए
मेरे चट्टानी सीने को
तोड़ने आये
पर मेरे सीने से टकराकर
उनके अमोघ अस्त्र-शस्त्र
चकनाचूर हो गये
रह गया मैं अक्षत
अक्षत, अक्षत !

उस दिन जब प्रेम की भाषा में
कुछ मित्रों ने
शब्दों की बौछार की
तो लगा
कि स्नेह की भाषा ने
मुझे बर्फ की चट्टान बना दिया है
प्यार सने शब्द
सूर्य की किरणें बन गये हैं
जिनके मधुर स्पर्श से
मैं पानी पानी हो गया हूं
और मेरा अस्तित्व
धीरे धीरे मिट रहा है !



मेरी परछाइयां!



अतीत एक मैली चादर है
मैंने उसे उतार फेंका है।
मैंने नये परिधान पहन लिये हैं
और मैं नयी राहों की तलाश में
निकल गया हूँ।

लेकिन यह क्या?
मैं स्तब्ध हूँ!
मैं रोमांचित हूँ!!

अभी जब मैंने
पीछे मुड़कर देखा
तो पाया
कि मेरी ही परछाइयां
मेरा पीछा कर रही हैं!



जिन्दा मुर्दे !



मेरे दिमाग मे कब्रें हैं,
जिनमे जिन्दा सपने
दफना दिये गये हैं !

हर रात को
ये जिन्दा मुर्दे
अपनी कब्रों से बाहर निकलते हैं
और
हर दिन की समाधि पर
चढा देते हैं
भावना के कुछ सडे हुए फूल
जला देते हैं
इच्छाओ के कुछ तेल-हीन दीपक !
फिर ये जिन्दा मुर्दे
अपनी कब्रो म लौट जाते हैं।



दो लघु कविताए



१ उस दिन

उस दिन
उन खामोश पहरो म
सडक के दोनो किनारो पर खडे
दो जवान पेडो को
एक दूसरे क गले म बाह डाले
आलिगन-बद्ध देखा
तो मैंने महसूस किया
कि वे मैं और तुम थे ।

२ वह सध्या

उस उदास सध्या क समय
पहाडो म घिरे हुए
मैंने तुम्हे आवाज़ दी ।
मेरी आवाज़
पत्थरो म सिर फोडकर लौट आयी ।
मेरी आवाज़ का उत्तर
मेरी ही आवाज़ थी ।



तुम्हारे द्वारा बुना हुआ स्वेटर



आज तुमने स्वेटर बुनकर
जिस मुस्कान के साथ
उसे मुझे समर्पित किया
तुम्हारी कसम !
मैं अभी भी
उस मुस्कान की सकरी घाटी में भटक रहा हूँ ।

तुमने यह क्या पूछा—
कैसा बना है स्वेटर ?

क्या मेरे लिए
इतना ही काफी नहीं है
कि इसे तुमने बुना है
और इसके माध्यम से
तुम्हारी पतली उँगलियाँ
मेरे तन मन का
स्पर्श कर रही हैं ?



सिगरेट बोलती है !



मै एक सिगरेट हू !
मुझे पीते हैं लगक कवि या नियोगी,
आत्म विस्मृति क लिए
तन्मयता के लिए
एकाकीपन क लिए !

मैं एक सिगरट हू।
मुझे पीत ह बाबू लाला या अफसर–
शौक फरमाने क लिए
रौब जमाने क लिए
शान दिखान क लिए।

लकिन मुझे किसने पहचाना इनम ?
मरा व्यक्तित्व कितना विशाल ह–
यह किसने जाना ?
कौन जानता है कि म जलती हू अपन आप म
और मेरी आहो का धुआ
निकलता है पीने वालो क मुह स ?

मुझे किसी कवयित्री
की ये पक्तिया निरथक लगती है–
तू जल जल जितना होता क्षय
वह समीप आता छलनामय !
क्योकि जब मैं जल कर क्षय होती हू
तो कोई छलनामय मेरे समीप नही आता
पीनेवाला फक दता है मुझे सडक पर
चौराहे पर

और कुचल देता है मुझे
खुद ही अपन परा स !

मुझे अधरों पर सुलाने वालो !
मुझे चूमने वालो !
मेरा आलिंगन करनेवालो !
तुम्हीं मुझे खत्म कर देते हो कश खींच खींच कर
जैसे खटमल चूसता है रक्त को !
दुनिया के लोगो !
तुम अधरों पर सुलाकर
पैरों से कुचलने की कला खूब जानते हो !
भला तुम मेरे व्यक्तित्व की महानता
क्या समझोगे ?
तुम्हारे लिए तो मैं केवल सिगरेट हूं !
केवल सिगरेट !!
!!!

रेखा-चित्र



नाइलन की साडी म है सिमटा हुआ शरीर
एडियो म लचकते हुए काटा म है मन्दिर
जुल्फो म मटकता हुआ टाटा का है कम्पू
होठो पर उभरती हुई लिपस्टिक की है परत
गालो पर उमडते हुए पाउडर क है बादल
नना स झाकती हुई सुरम की है रेखा
बडी मासूम है
बडी कोमल है
बडी नाजुक है हसीना ।

बाय हाथ की कलाई पर है सोन की घडी
हथली म लटकता है मोती जडा मनीबग
दाहिने हाथ म बजता हुआ ट्रांजिस्टर रेडियो है
उगली म चमकती है लाल सिहा की अगूठी
नाखूनो पर मचलती हुई पालिश की चमक है
गले के हार म हसता हुआ है श्वेत नगीना,
बडी मासूम है
बडी कोमल है
बडी नाजुक है हसीना ।

बडे नाज स अदाज स इसे पाला जाता है
नाजुक बदन के लिए
विदेशो स नाजुक अनाज मगाया जाता है,
चीनी का कही इसस बडे दूर का नाता है
सब्जियो स इसका जी घबराता है
दूध मक्खन स यह डरती है
चाय-काफी स इश्क करती है
बिस्किट स पेट भरती है
नमकीन प्लेटो पर मरती है

थोड़े मे परिश्रम मे इसे आता है पसीना,
बड़ी मासूम है
बड़ी कोमल है
बड़ी नाजुक हसीना ।

इसके भीतर यदि झांको तो खोखला ढाचा है
आखो के भीतर गहरे डूबे हुए गड्ढे हैं,
जुल्फों के किनारों पर उगते हैं सफेद अंकुर
यों आती है हर वर्ष
भारत में दीवाली ।
यों आती है हर वर्ष
भारत में दीवाली ।।

•

कौए और आदमी



जगल स गुजरत हुए
दखे मैंन तीन कौए–
तीनो मुझ पर आक्रमण करन के लिए
हवा म पतर बदल रहे थे।

आक्रमण का कारण जानना चाहा मैंन।
पास था एक पेड
पड पर था घासला
घासले म हाग उनक शिशु–
मैंने सोचा और आश्वस्त हो गया।

तीन कौए क्यो ?–मैंने सोचा।
एक मादा हागी दा हागे नर।
एक मादा !
दो नर !!
दानो उन शिशुओ क दावदार !
दोना पहरेदार !!

मै परेशान हो गया।
मैंने इस स्थिति म
आदमी को डालकर देखा
तभी मरे दिमाग म गूज गयी गोलिया
शरीर म एठ गयी एक हत्या
हृदय पर चिपक गय खून क कुछ धब्बे।



तुमने देखे हैं ताजमहल !



तुमने समीपता ही पायी हर मंजिल में
तुम क्या समझो वाभिल राहों की दूरी को !
तुमने देखे हैं ताजमहल जगमग करते,
तुम क्या समझो विन माल बिकी मजदूरी को !

रंगीन समाओं ने तुमको दुलराया है,
तुमको बहलाया है फूलों ने कलियों ने
चंचल चितवन ने चकित किया चचलता से
तुमको भरमाया है रूमानी गलियों ने !

तुमने केवल आदर्शों के गुरु पाठ किये
तुमने यथार्थ के कड़ुवे घूंट को पिया नहीं !
तुमने सहलाये कुंतल शोख कल्पना के
तुमने दिल के रिसते घावों को सिया नहीं !

तुमको जीवन से मिले छलकते पैमाने
तुम क्या समझो आंसू भीगी मजबूरी को !

हर नये क्षितिज ने तुम्हें दिये उपहार नये
हर पगडंडी को दीपित किया चांदनी ने
हर नयी मोड़ पर तुम्हें मिली मनुहार नयी
हर चौराहे पर स्वागत किया रोशनी ने !

तुमने केवल बहते झरनों के गीत सुने
गागर में उठते गिरते ज्वार नहीं देखे !
है तुम्हें रिझाया घूंघट डाले घटाओं ने
तुमने बिजली के स्वर अंगार नहीं देखे !

है तुम्हें मुबारक अर्थ हीन हर नयी सुबह
तुम क्या समझो ढलती संध्या सिंदूरी को !



सरदी की रात का गीत



सरदी की यह सुनसान रात
है सुन सडक
भूगा व लटर मुराडो-सी
कुछ घास फूस की झोपडिया
है आस पास
जो एक हवा के थप्पड का सह मर नहीं
लगती है यो
परित्यक्त प्रियतमा हा निराश !

मिल के कल-पुर्जो
की ध्वनिया है गूज रही,
बारह बजने की सुस्ती
दिखती गिरजाघर की आखो म
चिमनी गाती है गीत मशीनो
का मीठी झपकी लेकर
भर रही उडानें ढलती रात
उदास हवा की पाखो म ।

लडखडा रही है मौन रोशनी
लम्प पोस्ट की बाहा मे
कुछ कुत्त रह रह भौंक रहे
चमगादड पलकें बिछा रहे ह
नयी सुबह की राहो मे !



लम्बी कविताएं

स्थिति-बोध

•

खो दिया है यदि हमने सम्बन्धों का अर्थ
तो यह मत समझना ऐ दोस्त !
कि हम वहशी हो गये हैं ।
हमारे लिए उन सम्बन्धों में
कोई अर्थ ही नहीं बचा था ।
यह तो हम
अतिरिक्त वजन ढो रहे थे
जानवरों की तरह उसे ढोने में तुक ही क्या थी ?

मकड़ी के जाले-सा
हो गया है पैसे का कुछ ऐसा फैलाव
कि सारे सम्बन्ध उलझ गये हैं
महीन तन्तुओं में !
उनके नंगेपन पर
दुनियादारी का लबादा डाल दिया गया है,
ताकि खोखलापन ढका रहे
और दिखावटीपन
जिन्दगी का नाम धरकर
एक-सी रफ्तार से चलता रहे !

बचा ही क्या है इस बौनी दुनिया में ऐ दोस्त !
जिसे प्यार किया जा सके
सिवाय अपने अस्तित्व के
जिससे प्यार करना हमारी मजबूरी है ?
कहते हैं कि जिन्दा हैं हम लोग,
क्योंकि दिन अभी आता है
और रात अभी ढलती है
जिनसे हमारे जिन्दा होने का पता चलता है !

ईर्ष्या है हम उन पूवजा म
जो पालत रह सपना के ताजमहल
रचते रह आदर्शों के गढ !
हमारी पीढी तो
स्वप्न भग का उन गलिया स गुजर रहा है,
जिधर झाकन का साहस
कोई मूल्य
कोई आदश
कोई गीत
नही करता ।

ऐस म माफ करना मुझे ए दास्त !
अगर खो दिया है मैंने
पूनम का चाद
झरनो का सगीत
हवाओ का अहसास
और समुद्रो का विस्तार !
हमारी आख और हमारे कान
रूप नाद और श द
की परम्परा खो चुके है
और इस कदर परिचित हो गय हैं
भीतरी चीखो स
कि सब प्रकार क रूप नाद और शब्द
हम अनसुना छोड जात है ।

कट गयी है हमारी कविता
सयोग वियोग स
नख शिख सौ दय स

अभिमान प्रसंगा से,
क्योंकि कविता हमारे लिए
अवकाश बिताने
या मुग्ध रिझाने की वस्तु नहीं है।
कविता हमारे लिए एक कुली है
ढोती है बोझ
तय करती है फासले।

माफ करना ऐ दोस्त।
कि हमारी कविता पथ भ्रष्ट हो गयी है
क्योंकि जिस पथ से उसे गुजरना था
उसकी सारी पगडंडियाँ काट दी गयी हैं
सारी लकीरें मिटा दी गयी हैं।
और हम जानते हैं उनको
जिन्होंने हमारी कविता के रास्तों पर
मशीनों के दैत्य बिठाये हैं
और बारूद की स्याही पाती है।

इसमें भी आश्चर्य ही क्या ऐ दोस्त।
अगर हम हँसना भूल गये हों
हँसने का अर्थ ही क्या है उन मंजिलों पर
जहाँ से
दर्दनाक आँसुओं का कारवाँ गुजर रहा हो।

शायद बच गये हों अब भी कुछ लोग
जो रस-हीन जिन्दगी में भी
रस की खान ढूँढ़ रहे हों
लेकिन हम तो ऐसे पात्र हैं त्रासदी के
जिनका भविष्य

विलेन के गजर पर टिका है
श्रौर विलेन सजर तेज कर रहा है ।

इन सबके बाद भी ए दोस्त !
मैं नहीं हू नागरिको की उस पंक्ति म
जो टूटन ऊब घुटन को
इतिहास की नियति मान बैठे हैं ।
मैं तो वह युयुत्सावादी हू
जिसे ज़िन्दगी के विरुद्ध की जा रही
सारी साज़िशों का पता है
ग्रस्तित्व के खिलाफ
बनाये जा रहे मारक लाक्षा गृहों की जानकारी है
श्रौर जो
शहीद सैनिकों की परम्परा में
किया जानेवाला पहला हस्ताक्षर है ।

यह बात ग्रलग है ऐ दोस्त !
कि खो दिया है मैंने
पूनम का चाद,
झरनो का सगीत
हवाग्रो का ग्रहसास
समुद्रों का विस्तार
श्रौर कविता का रस !

●

विद्रूपता का अभिनय



तुम्हारा होली खेलने का निमत्रण
कितना निर्जीव !
कितना बेसुरा !!

इस बदरग अस्तित्व मे
कहा हैं इतने रग,
जितने पिचकारियो मे भर कर
तुम बहाना चाहते हो ?

बीमार आस्थाओ की
इस महानगरी मे
कहा है वह खुशहाल विपुलता
जिसे मुट्ठिया भर भर कर
गुलाल की आधियो म
तुम उडाना चाहते हो ?

कौडियो के मोल खरीदे जानेवाले
इसान के अस्तित्व म
कहा है वह सगीत
जिसे बासुरी व मृदग,
'डफ और ढोलक' की ताल पर
तुम बिखेरना चाहते हो ?

इस पगु परिवेश के मुर्दा चेहरो मे
कहा है वह उमाद वह रौनक
जिन्हे तुम फाल्गुन के गीतो म
गाना चाहते हो ?

मौत जनने वाली इस कुरूप सभ्यता म
कहा है वह थिरकन, वह धड़कन,

जिन्हें तुम नृत्य करते
पावों के घुंघरुओं में बांधना चाहते थे।

तुम्हारा होली मेलन का निमन्त्रण
कितना निर्जीव !
कितना बेसुरा !!

चाहते हो तुम
रिक्तता के मातमी प्रहरों को
हर्ष और उल्लास से भरना !
चाहते हो तुम
कोसों फैले रेगिस्तान में
अमृत का झरना !!

जिन्दगी की तस्वीर—
तुम और मैं !
और हमारे ये प्रतिरूप !!
होली खेलना हमारे लिए
विद्रूपता का अभिनय होगा
मेरे साथी !

हम एअर-कंडीशंड कमरों में सजे
सोफा सैट नहीं हैं
हम संगमरमरी दीवारों पर लटकते
गांधी और बुद्ध के तैल चित्र नहीं हैं
हम मर्करी लाइट से प्रकाशित
गोदरेजी तिजारियां नहीं हैं
हम मखमली गद्दों को रौंदनेवाले
दिवा स्वप्न नहीं हैं !

इस लो है–
क्लर्क की व्यथा।
टाइपिस्ट की उंगलियों का श्रम।
गृहिणी की आत्मा का धुआँ।
बाल विधवा के आँसू।
मेम्बर की मशीनी गर्मी कलम।
श्रमिक के घर पर झूमती भूख।
कुली के डगमगाते कदम।

इनका उग्र रूप
और तुम्हारा होटी मेनन का निमंत्रण।
क्षमा करो साथी।
विद्रूपता का यह अभिनय
अब मुझसे नहीं हो सकेगा।

•

ये सूरतें,

ये शक्लें,

ये तस्वीरें!

•

मुझे इन सूरतों ने घेर लिया है!
मुझे इन शक्लों ने दबोच लिया है!
मुझे इन तस्वीरों ने गिरफ्त में ले लिया है!
    ये सूरतें!
    ये शक्लें!!
    ये तस्वीरें!!!

कागजों पर जब जब कलम दौड़ता है
कल्पना के घोड़े
जब जब अपनी तेज रफ्तार में
जिन्दगी को पीछे छोड़ देते हैं
तब तब ये सूरतें जन्म लेती हैं
ये रेखाएं आकार ग्रहण करती हैं
ये शक्लें ये सूरतें ये तस्वीरें
छटपटा कर पन्नों पर उतर आती हैं।

यह उदास उदास
यह निराश सूरत किसकी है?
यह बोझिल चाल
ये बिखरे बाल
ये फटे हाल
यह मेरा ग्वाला है!
महीने भर में दिये गये दूध का
हिसाब मांगता है।

यह अट्टहास अट्टहास

यह मनहूस शक्ल किसकी है ?
यह मक्कार हँसी
ये चंचल आँखें शरबती
यह वर्तमान खुशी
यह मेरा महाजन है।
शादी में दिये गये ऋण का
भुगतान चाहता है।

यह हताश, हताश
यह सिर पीटती तस्वीर किसकी है ?
यह हाथों में सिर थामे
ये चेहरे पर झुकी शाम
ये थकी हुई जर्जर टाँगें
यह किराने का परचून दुकानदार है।
महीने भर उधार दिये गये सामान का
भुगतान माँगता है।

ये सूरतें
ये शक्लें
ये तस्वीरें
मुझे घेर रही हैं।
मुझे दबोच रही हैं।।
मुझे गिरफ्त में ले रही हैं।।।
और सूरतें।
और शक्लें।।
और तस्वीरें।।।
एक के बाद एक
एक से अनेक

इन सबसे घिरी है मेरी सूरत
टूटते हुए सितारे-सी
जाल में छटपटाते कबूतर-सी
लंगड़ाते हुए हरिण सी ।

यह मासूम मातूम
यह उतरी उतरी सूरत किसकी है ?
यह पुछी हुई चमक
ये नुचे हुए सपनों की दमक
यह हारे हुए जीवन की खनक
यह मेरी पत्नी है ।
बासी अरमान लिए
सड़ रहा है इसका दिल
इसके दिमाग में चीख रही हैं
सपनों की भ्रूण हत्याएं ।
इस सूरत पर
अतीत राख बनकर बिखर गया है
इस देह में
खोयी हुई सम्पत्ति की याद
सुइयों की तरह चुभ रही है ।
एक बार शिशुओं की तरह
यह खुशियों की पतंग पकड़ने को
बेतहाशा दौड़ी थी
उन्मादिनी सी
पर इसके हौसलों को
इसके संकल्पों को
इसके नजारों को
एक मध्यवर्गीय परिवार

उसके आर बच्चो
और परम्पराओं न मिलकर
चुपचाप पी लिया।

य निदाप निर्दोप
य अनाथ गगन किसकी हैं ?
य सहमी हुई आकृतिया
य डरी हुई आकृतिया
य जागी हुई नवीन स्मृतिया
य दो बालिकाए
सावन की घटा-सी
य दो बालक
नव जन्म गुनाव से।
य गतान कलाकार
य मर बच्चे हैं !
इनके कमनार जिस्मा को
कीमतें नोच रही हैं
इनकी देह म
वतमान घुट रहा है
इनकी आखा से
घायल आशाए झाक रही हैं,
इनके सामने
थका हुआ भविष्य
सिर झुकाये गुमसुम बठा है !

यह कमजोर, कमजोर
यह निर्धिनी तस्वीर किसकी है ?
यह बड़ बाहट

यह् वडवडाहट
यह् लडखडाहट
यह् मेरी मा है ।
इसने जिन्दगी को
वीमारी समझ कर ग्रहण किया
विधि का विधान समझ कर जी लिया
इसके सामने खड होकर
भाग्य ने अनंक बार
इसकी हसी उडायी है ।
एक जमाने म
यह तस्वीर भी बुनद थी
पर इसकी बुलदी
कल्पनाओं क हिमालय स फिमलकर
चकनाचूर हो गयी ।
आज इसकी आत्मा म
अनेक घाव रिस रहे हैं
इसक अतीत मे
अनेक साप रेंग रहे हैं
इसक मन पर
क्षोभ का एक अशात वादल फला हुआ है ।
यह् तस्वीर
अपने अंतिम कगारो पर खडी हुई
पिछले पचहत्तर कगारो पर
घणा के साथ थूक रही है ।
इस तस्वीर का
अव एक ही विश्वास है
शून्य ! शून्य !! शून्य!!!

कुछ व्यग्य-कविताए

१ बिना पढ़े ही !

हम टी० एम० एलियट म
मसीहा दीखता है
सात्र का अस्तित्वाद
हमारे मस्तक म है
आल्बयर काम् और अनय
हमारी वन ज्ञक म है ।

२ ईश्वर जाने क्या !

हम बीटनिको स प्यार है
एलेन गि सबग
हमारे गले का हार है
जाज सगीत क हम भक्त हैं
शेप स विरक्त ह ।

३ हमारा फशन !

सिगरेट क गोलाकार छ ला म
आओ लारस की चचा कर
आदमी और औरत को
आवरणो स नगा कर
इ सटिक्ट की जि दगी का
श्रद्धाजलि अर्पित कर
हमारा नारा—
अश्लीलता श द
कोश स हटाया जाय ।'

४ यह कल्पना !

यह उदास शाम
मारिजुआना खाकर आयी है !
(नोट—सुना है मारिजुआना
कोई मादक पदार्थ है !)

५ यह अनास्था !

विद्युत से जगमगाते
आलीशान कमरों में
होटलों व काफी-हाउसों में
हमारे सपनों की शाम
घुट रही है
अनब्याही आस्था
लुट रही है
हम मृत्यु के पथिक हैं !
हम मृत्यु के पथिक हैं !!

६ 'अ' से हमारा स्नेह !

गद्य में हम अगद्य हैं
पद्य में हम अपद्य हैं,
कथा में हम अकथा हैं
पाठकों के लिए व्यथा हैं
(बुद्धि में हम अबुद्धि हैं
अर्थ में हम अनर्थ हैं !)

७ हमारा व्यक्तित्व !

हमारे रक्त में
भूखी पीढ़ी
दिगम्बर पीढ़ी,

तथा नयी पीढ़ी
के कीटाणु रंग रहे हैं
वे हमारे
टेरलिन के परिधानों के नीचे
सुरक्षित हैं ।

८ यह मसीहाई !

ओ लोगो !
मजूर है हम
बिना सूली के नाश किया जाना
अब पडेगा तुम्हे
युग के यीशु के रूप में हमें स्वीकारना !

९ यह अंत में एक वक्तव्य !

लिखते हैं वक्तव्य अंत में
देते खुद को स्वयं बधाई
(रघुकुल रीति सदा चलि आई)
कितनी है यह सरल ज़िन्दगी
कितनी है सस्ती कविताई
अखबारों में मिली छपाई
(पाठक गण के समझ न आयी !)
इसमें किसका दोष गुसाई ?
आलोचक ने लिखी सफाई
कलम तोड़कर लिखी दुहाई
जय जय भाई !
जय जय भाई !'

•

परम्परा और हम



यह सत्य है कि हमारे पूर्वजों ने
समय की धारा पर
अनेक कीर्तिवान जलयानों के
लगर स्थापित किये थे
कि उन्होंने अपने यौवन को
हिमालयी बुलंदी दी थी
कि उन्होंने जीवन की पुस्तक में
अनेक नये पृष्ठ जोड़े थे,
कि वे अनेक
नये अध्यायों के कृतिकार थे।

यह सत्य है कि हमारे पूर्वजों ने
अपने पलों को
संगीत के धागों में गूँथा था,
कि उन्होंने समय के परों में
उड़ानें भरी थीं
कि उन्होंने रेत के ढेर पर
घरौंदों की रचना की थी।
यह सत्य है,
नंगा सत्य।

लेकिन यह सत्य नहीं
कि हमारे पूर्वज
हम से अधिक गतिवान
बलवान
तथा ज्योतिष्मान् थे।

हमारे पूर्वजों ने
अपने पूर्वजों को

सीमाओ का विस्तार किया
आज हम
उनकी सीमाए विस्तार रहे है ।

हमारे पूवजा की चतना म
अपने पूवजो की
शताब्दिया बसी हुई थी
आज हमारी चेतना म
हमारे पूवजो की
शताब्दिया बसी हुई है ।

हमारे पूवजा ने
प्रागतिहासिक अनुभूतिया के खण्डहरो पर
अपनी अनुभूतियो के घर बनाय थ
हम उनकी मध्यकालीन अनुभूतियो पर
आधुनिकता क प्रासादा की
रचना कर रह हैं ।

बीहड जगल की पगडडिया पर
हमार पूवजो के पद चिह्न
बलगाडिया ने अकित किये
उन बलगाडियो के पद चिह्नो पर
हमारी डी लक्स बस दौड रही है ।

हमारे पूवजा ने
आकाश के शून्य मे
नक्षत्रा की स्थापनाए की
आज हमारे अतरिक्ष यान
उन नक्षत्रो म

आदमी को स्थापित कर रहे हैं।

हमारे पूर्वजों ने
जितने क्षेत्रों की खोज की
उन सभी क्षेत्रों में
स्थापित कर रहे हैं हम
प्रकाश-स्तम्भ
हमारे पूर्वजों द्वारा निर्मित
सभी दरवाजों पर
हमारी नयी सम्भावनाएं
दे रही हैं दस्तकें।
इसलिए यह झूठ है
कि हम अपने प्रगतिशील पूर्वजों के
पिछड़े हुए उत्तराधिकारी हैं
हमारे लिए यह स्वीकृति होगी
हमारी आत्म हत्या
जबकि हम साहस के साथ
जी रहे हैं
और जीना जानते भी हैं।

हर शताब्दी में
एक नया सूरज चमकता है
एक पुराना सूरज अस्त होता है।
आज हमारी शताब्दी का सूरज
अपनी दोपहरी प्रखरता के साथ
तप रहा है
दहक रहा है
—कल के सूरज की प्रतीक्षा में

जो इससे अधिक
बलवान
और ज्योतिष्मान् होगा।



तुम्हारी याद मे



एक अजीब सूनेपन ने
मेरे सम्पूर्ण व्यक्तित्व को
अपनी बाहुओं में समेट लिया है।

कि आज इस मकान के
हर कोने में
खामोशिया भटक रही हैं,
अपने परिचित स्थानो पर
एक लावारिस सन्नाटा
गरदन लटकाये ऊघ रहा है।

कि तुम्हारे सपनो में सोयी हुई
मेरी चेतना
दूरिया को भी समीपता
समझने का भ्रम कर रही है।
आज यह स्पष्ट हो गया है कि
तुम्हारे बिना
मैं मैं नही हू।

पता नहीं इस दूरी ने
तुम्हारे मासूम मन को
परेशान किया या नहीं—
पर इन परेशानियों ने
मुझे तो बुरी तरह
परेशान कर डाला है।



मन आज गाने को बेचैन है।
गीतो की नदिया उमड़ेगी,

कविता के झरने बहुत ।
यह तुम ही तो हो
जिस में अपने गीतों में गा रहा हूं ।

बात जो लिखता हू
ईमानदारी से लिखता हू ।
तुम्हारे और मेरे बीच
प्रवचनाओं और रहस्यो का
कोई स्थान नहीं
क्योकि मैंने कभी तुम से
अधूरा प्यार नहीं किया ।

जो बात
अंतस्तल की गहराई से निकलती है
उसमे अलंकारो की क्या जरूरत है ?
उपमाओं का क्या स्थान है ?
छंदों का क्या अर्थ है ?
तुम्हारे और मेरे बीच
कृत्रिमता का कोई पर्दा नहीं
क्योकि मैंने तुमसे
दिल से प्यार किया है
दिमाग से नहीं ।



तुम्हारी आंखो को शराबी क्या कहूं ?
तुम्हारे तन को गुलाबी कहना भी व्यर्थ है ।
तुम्हारे सोने जैसे बालो को
रेशम की उपमा देते-देते

मैं बहुत बहक चुका हू ।

अब में तुम्हारे शरीर को दीपक न कहूगा
और तुम्हारे रूप को
दीपक मे प्रज्ज्वलित
दीप शिखा भी नही समझू गा ।

यह सब झूठ है
कि तुम्हारे गालो और फूलो मे
कोई समानता है
कि तुम्हारी आखो मे
किसी नीली झील की
झिलमिलाती परछाइया हैं ।

मुझे अफसोस है कि अब तक
मैं तुम्हे झूठे शब्द जाल म
बाधता रहा जकडता रहा ।
अब म यह समझ गया हूँ
कि तुम केवल तुम' हो
और तुम्हारी समानता
दुनिया की
किसी भी दूसरी वस्तु से नही ।

भावनाओ की तरगो मे बहना
मेर मन की दुबलता है ।
मेरी एक कमजोरी यह भी है
कि मैं यह जानता हूँ
कि मरी य भावनाए
तुम्हारी समझ या शक्ति स परे हैं ।

लेकिन इन सबसे ऊपर है तुम्हारा प्यार !
तुम्हारी निष्कपट सरलता !
तुमने तो अपने
व्यक्तित्व को ही
मेरे व्यक्तित्व में
समाहित कर दिया है ।
इससे बढ़कर मैं
तुम से क्या आशा रखता था ?
मेरी कलम की यह बकवास
समझने की तुम्हें क्या जरूरत है ?
तुम्हारा तो सारा अस्तित्व ही
मुझमें एकात्म होकर
सतह से बहुत नीचे
गहरा उतर आया है,
मेरी ये खोखली भावनाए तो
सतह के ऊपर शोर मचाती लहर है !

●

मोह भग

•

मुझे याद है !
मुझे याद है !!

तुमने मुझे सौंपे थे
खिले हुए गुलाब
और रंगीन गुलदस्ते !
तुम्हारे चेहरे के चमकदार शीशे में
देखी थी मैंने अपनी आकृति !
तुमने मुझमें खोजा था
शुद्ध संगीत भरा सपना
और मैंने तुम्हारी आंखों में
देखी थीं अपनी परछाइयां !

मुझे याद है !
मुझे याद है !!

मेरे प्यार !
अब कहां चले गये
वे गुलाब
वे गुलदस्ते
वे शीशे ?
गुलाबों की जगह गूंगी खामोशी !
रंगीन गुलदस्तों की जगह उदास विश्राम !
चमकदार शीशों की जगह चकनाचूर आदर्श !
मेरे प्यार
अब तुम मुझे
ये क्या सौंप रही हो ?

यह लुटा हुआ
घुटा हुआ वनमार
तो तुम्हारा ययार नहीं था !

उस महकते हुए
मस्ती म वहकत हए
अतीत का क्या हा गया ?
अब तो तुम्ह देख कर
भविष्य की कल्पना करन से ही
समूची आत्मा सिहर उठती है !
किसन की यथाथ की यह नगा हत्या ?
कौन है इस प्रच्छन्न षडयन्त्र का सूत्रधार ?
——मैं ?
या स्वय तुम ?
या यह पहरेदार व्यवस्था ?

मरे प्राण !
आज तुम मेरे सामन
एक प्रश्न चिह्न सी खडी हो
तुम प्रश्न चिह्न
अतीत पर !
वतमान !!
भविष्य पर !!!

तुम मेर प्रणय की जिज्ञासा थी
कसे बन गयी तुम एक पहेली ?
क्या पता
तुम नीरवता की चीख मात्र रह जाओ !

मेरे प्यार !
अब मुझे लगाव नही है
तुम्हार फूल जड जूड से
नीली झील सी आखो से

रेशमी केश राशि से,
गदरायी देह से,
मखमली अगडाइयो से,
गरमायी सासो से ।
अब यह सब कुछ
तुम्हारे और मेरे बीच
कल्पना मात्र रह गया है ।

जो कुछ यथार्थ बचा है,
वह है
एक कुरेदा हुआ सपना ।
एक मसला हुआ गीत ।
एक बासी अरमान ।
एक फासी-लगी आत्मा ।
एक गला घोटा हुआ छन्द ।
एक मुरझाया हुआ
लावारिस सगीत ।



पतझडों का शृंगार !

•

तू अपनी गीतों का शृंगार कर
और मुझे अपनी धौराणियों का जन्म में
निखार होता है।

सामानियों का गम में गम
यू ही मत टूट
कि आंसुओं के पानी में भटक जाए !

मेरे साथी !
सामानियों ने आज तक
किसी भी समस्या का हल नहीं खोजा
चुपता ने आज तक
किसी भी जिन्दगी के दर्द को नहीं जाना
किसी भी बोझ को नहीं बांटा !

मेरे बधु !
हृदय की वीणा पर
अपनी अंगुलियों का यूं प्रहार कर
कि रोम रोम में ध्वनियां बिखर जाय
लय की नदी में नहाकर
शब्दों को इतने ऊंचे स्वरों में आवाज़ दे
कि दूर वादियों में भटकती
बहार लौट आय
और तेरे देश में आकर
रोशनी का रथ थम जाय !

मेरे साथी !
यदि पुकारना है
तो गीतों के भूकम्पों को पुकार
कविताओं के लावा को पुकार

लेखनी के ज्वार-भाटो को पुकार
जिनके भीषण उद्‌घोषों से
अंधेरों के साये पहरा छोड़कर भाग जायं
फिर तुम अपने पतझरों का शृंगार कर सको
और मैं अपनी वीरानियों की जुल्फों में
सितारे टांक सकूं !



गम के समुद्र में इस प्रकार
उतर जाने से क्या होगा ?
समुद्र में डूबनेवालों ने
किसी भी मंजिल का उद्धार नहीं किया !

तुम्हारे गम के समुद्र में उतर जाने पर
आजादी के दीवाने
तोपों की भट्ठी में भुनते रहेंगे
वियतनाम में सुहाग के बाग उजड़ते जायेंगे
नन्ही किलकारियां
मकान गनों की बौछारों में मरती रहेंगी
और पाठशालाएं,
गिरजाघर
डाक घर,
तथा रेलवे स्टेशन
हवाई हमलों में पटों में घुमते जायेंगे।

मेरे साथी !
इस गम के कपट का पर्दा हटा
और अपने भीतर सोये हुए आदमी से कह
कि वह अपने हाथों पर

घणा और लिप्सा के विरोध म
इन्कलाब के नारे बुलाय
जिनके भीपण उद्घोपा स
निहत्था पर वार करने वाले
हथियारा को लम्बा मार जाय !
और अधेरो के साये पहरा छोड कर भाग जाय ।

फिर तुम अपने पतझडो का शृ गार कर सको
और मैं अपनी वीरानिया की जुल्फो म
सितारे टाक सकू ।



तपस्वियो की तरह
हाथ पर हाथ धरकर
पालथी मारकर समाधि लगाकर
'ओ३म् शाति ओ३म् शाति' के—
पाठ करने से क्या होगा ?

शाति और तपस्या का अथ
केवल आदमी समझते हैं !

मेरे बधु !
तेरा अणु-बम न बनाने की
शाति प्रतिना का गला
चीन का पचशील दबाता जा रहा है
तेरी विश्व-बन्धुत्व की तपस्या को
ताशकद समझौता मिटाता जा रहा है
और दूर सरहदों पर
नयी वनी बरका तथा खाइयो स

गानी की धीमी आवाज़ साफ सुनायी द रही है
ओट म छिपी तोपा के मुहा म
अभी अभी भर बारूद की सडाध
हवा म मडरा रही है
और क्रुद्ध वायुयान
हमारे आकाश को मापन की तयारी म
तन पीते जा रह हैं।

मेरे साथी !
ताशकद-समझौता हा या पचशील—
दोस्ती हा सकती है इसाना मे
हैवानियत का
इलाज केवल एक है—
—खून
मौत
और विजय !
ताकि तू अपन पतझडा का शृ गार कर सके
और मैं अपनी वीरानिया की जुल्फा म
सितार टाक सकू !

●

अकमण्यता की चादर म सिमट कर
यू जिदगी काट लेन स क्या हागा ?

उदास चहरा न
कहा भी वीराना म फूल नही सजाय
कुठ हुए मस्तका न
किसी भी अपमान के कलक का नही धाया !

मर बधु !
तर उदासी म इम प्रकार घुटन रहन स
तरे ही घर म डाके पडत रहग
भूख की चुडल
तरे भाई-बहिनो का जवानिया का
निगलती रहेगी
फसलो का सौदय
गोदामो की काल-कोठरिया म सडता रहगा
देश की अनेक सिसकियो पर
दो चार मुस्कान बिखरती रहगी
और सरकारी मेजा पर पड एकाच श्राकर
सस्कृत नाटको के
विदूषको का मफल अभिनय करत हुए
खाखली बनावटी और
झूठी हसी हसते रहेगे !

मरे साथी !
मेरे बधु !
अगर तुम्हे
अपने पतझडो का शृ गार करना है—
अगर मुझे अपनी वारानियो की जुल्फा म
सितारा को टाकना है—
तो हम एक शक्तिशाली मोर्चा बनाना हागा
जिससे
अजगरा के घेरो म बद पडे फूल
आजाद हो सकगे
खाई हुई आखा म
काजल चमक सकेगा

सूने मस्तक पर
बिन्दी सवर सकेगी,
लुटी हुई मुस्काना का
उद्धार हो सकेगा
तडखडाती हुई आस्थाओ तक
नयी सुबह की रोशनी पहुच सकेगी
और रावण के रथो मे जकडी हुई
भावनाओ की सीताए
मुक्त हो सकेगी।

और सबसे बडी बात—
मेरे बन्धु!
मेरे साथी!
तेरे पतझडो का शृगार हो सकेगा
और मेरी वीरानियो की जुल्फो मे
सितारे टक सकेगे।

●

पराजितो का वक्तव्य



हम अजर हैं अमर हैं अजेय हैं
क्योंकि हम किसी से संघर्ष ही नहीं करते।

हम इस खूबसूरत विश्व के
रचयिता की सराहना करते हैं
तथा हमारे खुदा ने
जो हसीन जिन्दगी
हमें जीने के लिए दी है
उसके लिए हम उसके प्रति कृतज्ञ हैं।

विप्लव अमन
क्रांति परिवर्तन,
तथा बगावत —
ये परिभाषाएं आतंकवादियों की हैं
जिन्हें हम बहुत ही हीन दृष्टि से देखते हैं।
हमारा पूर्ण विश्वास
हर स्थिति के वर्तमान रहने में है।
इस वर्तमान जिन्दगी के लिए
हम अपने खुदा का लाख शुक्र करते हैं
और कसम खाते हैं
कि हर नाजुक समय में
हम इस जिन्दगी को जियेंगे
जहर और अमृत के घूंटों को
सहज भाव से पियेंगे।
हम इस खूबसूरत जिन्दगी को
संवारेंगे दुलारेंगे
तथा इसे निष्काम भाव से जियेंगे।

हम समदर्शी संत हैं

गांधी और विनोबा के भक्त हैं
गौतम और महावीर के अनुयायी हैं,
सुकरात और मीरा के राही हैं।

नेपालियन और भगतसिंह
सुभाष और क्रॉमवल
लेनिन और लुमुम्बा
के नामों से भी परिचित हैं।
उनके संघर्षों की दार्शनिक व्याख्या में
घंटों भाषण दे सकते हैं,
पर उन जैसी खून-खराबी
हम कर भी तो कैसे सकते हैं।

दिल से हम अधीर हैं,
दिमाग से हम वीर हैं,
स्वभाव हमारा गम्भीर है।
मारते हम मीर हैं— (बातों में)।
सत्ता सम्पन्न पत्थरों की भी
चरण-कमलों की वन्दना करते हैं
हम न तो किसी को डराते हैं
और न हम किसी से डरते हैं।
केवल बात के धनी हैं,
शब्दों के शहंशाह हैं,
बातों में ही मारते हैं
बातों में ही मरते हैं।
साधना से हम दूर हैं
पर प्रथम पंक्ति में रहने को हों
दिल तथा दिमाग से मजबूर हैं।

जिसके लिए
हम नित नयी योजनाएं बनाते हैं
इस हसीन जिन्दगी के
गीत गुनगुनाते है ।
सत्ता के मंदिरों में
दीपक जलाते हैं
तथा प्रभुग्रों से वरदान पाने के
सपने सजाते हैं ।

हमें न जमाने से कुछ गिला है
न कोई वक्त का ही कुसूर है ।
जो कुछ खुदा ने दे दिया है
वह सब हमें मंजूर है
वह सब हमें मंजूर है ।

ग्रो हमारे ग्राका !
ग्रो हमारे मालिक !
बस इतना वरदान दे दे
कि हमारा ग्रस्तित्व बना रहे
ग्रौर हम तेरे द्वारा दी हुई
इस हसीन जिन्दगी को जीते रहें ।
हम इसे प्यार करने की कसम खाते हैं
इसकी पूजा करने की कसम खाते है
इसे न बदलने की कसम खाते हैं ।

बादल बरसें ग्रोले गिरें
ज्वालामुखी फटें पहाड़ गिरें
बिजलियां कड़कें धरती धड़के
भूकम्प नाचे या ग्राकाश गिरे—

हम कभी भी विचलित न होंगे।
हम कभी भी चिंतित न होंगे।

ये सब तो खुदा के दूत हैं
जगत में जीव के लिए
माया के बंधन हैं।
इन सबका स्वागत है!
विवाह शादियों की तरह
इन सबका स्वागत है!

हम हर स्थिति में
हर स्थान पर
भारतीय संस्कृति के गीत गायेंगे
रामायण और महाभारत का
पुनःपाठ करेंगे
तथा गीता के अट्ठारह अध्यायों का
मशीन की तरह रटते जायेंगे।

हम इस हसीन जिन्दगी से प्यार है
हम इस खूबसूरत जिन्दगी से प्यार है
ओ हमारे प्रभु!
ओ हमारे आका
तुझे शत शत नमस्कार हैं!
तुझे शत शत नमस्कार हैं!!

आत्म-हत्या पर्याय नारी



आत्म-हत्या और नारी
दो समान धर्मी पर्याय है
मेरे इस देश भारत म !
आत्म-हत्या बनाम नारी
नारी पर्याय आत्म-हत्या !

नारी
जिसे गगा-सी
पवित्र बताया जाता है
मेरे इस देश भारत म
नारी
जिसका सतीत्व
हिमालय से ऊचा बताया जाता है
मेरे इस देश भारत म ।

आत्म-हत्या बनाम गगा !
आत्म हत्या पर्याय हिमालय !
आत्म हत्याओ के माध्यम हैं—
स्टोव और चूल्हे
कुए और नदिया
ट्रेन और बसें !

मेरा यह देश भारत
गगा का पुजारी !
हिमालय का बेटा !
आत्म हत्या को
सही अर्थ म नही स्वीकारता
क्योंकि आत्म हत्या का
सही अर्थ है नारी

नारी का सही अर्थ है गंगा
नारी के दूसरे पर्याय हैं
सीता राधा सावित्री,
इसलिए मेरा यह देश भारत
आत्म-हत्या को
'दुर्घटना' कहता है ।

स्टोव में जलना
एक दुर्घटना ।
कुएँ में कूदना
एक दुर्घटना ।
ट्रेन से कटना
एक दुर्घटना ।
नदी में डूबना
एक दुर्घटना
नारी का पर्याय
एक दुर्घटना ।

फिर कथाएँ पढ़ी जाती हैं
सुनती हैं परम्पराएँ
हाथों में मालाएँ घुमाती हुई
परम्पराएँ
जो आत्म हत्याओं की माएँ हैं ।

कथाएँ होती हैं
सीता के प्रेम की अनन्यता पर
सीता
जो आज भी स्टोव में जल जल कर
अग्नि-परीक्षा दे रही है ।

कथाएं होती हैं
राधा की अनुरक्ति पर,
राधा,
जिसे आज ही उसके घरवालों ने
कालिंदी में डूब मरने के लिए
घर से निकाल दिया है।

कथाएं होती हैं
सावित्री के सतीत्व पर
सावित्री
जो आज भी
किसी तेज स्पीड से भागती हुई
ट्रेन से कटकर
अपने सत्यवान् को खोजने
यम लोक पहुंच रही है।

आत्म हत्या
पर्याय नारी।
नारी
पर्याय आत्म हत्या।
●

ओ मेरे उखड़ते हुए विश्वास !

•

ओ मेरे उखड़ते हुए विश्वास !
ओ अपनी धुरी से छूटते हुए नक्षत्र !
तू रुक भी जा,
तू थम भी जा,
अधूरी बात बाकी है,
अंधेरी रात बाकी है !

नत-मस्तक हैं अनेक
अधखिली आशाएं
सजल नयन लिए
रास्ता पर खिंची हैं
अध पकी आस्थाएं

कितनी प्यासी सुबहों की
अध-मुंदी पलकें
अनीना में पथरा रही हैं
कितने गगनचुम्बी सपनों की
अध-मरी प्रेतात्माएं
पाताल में मंडरा रही हैं।

ओ मेरे उखड़ते हुए विश्वास !
ओ मेरे ढलते हुए सूरज !
तू रुक भी जा
तू थम भी जा
अधूरी बात बाकी है,
अंधेरी रात बाकी है !

ओ मेरे उखड़ते हुए विश्वास !
क्या तू था हीं

[illegible]

इच्छाओ का कफ़ बनने देगा ?
प्यार के गीता का सद बनन देगा ?
रंगीन बहारो का ज़द बनन देगा ?

क्या तू या ही
बच्चो के होठा पर हसी का सूखन देगा ?
इन्सानियत के ग़ाता म गीदड़ा का भूकन देगा ?
बसता की लाशा पर गिद्धा का घूमन देगा ?
ओ मेरे उखडत हुए विश्वास
ओ मेरे राख बनते हुए ज्वालामुखी !
तू रुक भी जा
तू थम भी जा
अधूरी बात बाकी है।
अधेरी रात बाकी है !

●

ओ मेरे उखडत हुए विश्वास !
क्या तू सिसकिया सुन सुन कर भी
यह समझता रहेगा
कि तुमन कुछ नही सुना ?
क्या तू अस्मता का बिकता देखकर भी
यह साचता रहगा
कि तुमन कुछ नही देखा ?
क्या तू पराजय का हर सन्दभ से जुड़ा पाकर भी
यह मानता रहेगा
कि हमारा पराजय स कोई रिश्ता नही ?

क्या तू किरणा का कालिख लगने देगा ?
क्या तू चार अधेरो को

रोशनी का ठगन देगा ?

आखिर कितनी बार
आत्म प्रवंचनाओं को गले लगायेगा ?
आखिर कितनी बार
दिल के गर्भ प्रयाग में
दूध धोये गया को भुलायेगा ?
आखिर कितनी बार
इन घायल गलतफहमियों को
दुलारेगा दुलरायेगा ?
ओ मेरे उगते हुए विश्वास !
ओ मेरे भाटा बने हुए ज्वार !
तू रुक भी जा,
तू थम भी जा,
अधूरी धार बाकी है।
अधेरी रात बाकी है।

•

ओ मेरे उगते हुए विश्वास !

मेरे मन की मधुयामिनी
[illegible] ने गुजारा है,
अधेरी गुफाओं में अकसर
रातों ने गुजारा है।

इधर आंखों की सीपों में
मासूम बूंदियों का बसेरा है,
इधर हर नर बन आदमी पर
शायद का पहरा है

इच्छाओं को बर्फ बनने देगा ?
प्यार के गीतों को सर्द बनने देगा ?
रंगीन बहारों को ज़र्द बनने देगा ?

क्या तू यों ही
बच्चों के होठों पर हँसी को सूखने देगा ?
इन्सानियत के आँगन में गीदड़ों को भूँकने देगा ?
बसन्तों की लाशों पर गिद्धों को घूमने देगा ?
ओ मेरे उखड़ते हुए विश्वास
ओ मेरे राख बनते हुए ज्वालामुखी !
तू रुक भी जा
तू थम भी जा
अधूरी बात बाकी है।
अँधेरी रात बाकी है !

•

ओ मेरे उखड़ते हुए विश्वास !
क्या तू सिसकियाँ सुन सुन कर भी
यह समझता रहेगा
कि तुमने कुछ नहीं सुना ?
क्या तू अस्मतों को बिकता देखकर भी
यह सोचता रहेगा
कि तुमने कुछ नहीं देखा ?
क्या तू पराजय को हर सन्दर्भ से जुड़ा पाकर भी
यह मानता रहेगा
कि हमारा पराजय से कोई रिश्ता नहीं ?

क्या तू किरणों को कालिख लगने देगा ?
क्या तू चार अँधेरों को

रोशनी को ठगने देगा ?

आखिर कितनी बार
आत्म प्रवंचनाओं को गले लगायेगा ?
आखिर कितनी बार
दिन के सफेद प्रकाश में
दूध धोये सत्यों को झुठलायेगा ?
आखिर कितनी बार
इन कायर गलतफहमियों को
दुलारेगा दुहरायेगा ?

ओ मेरे उखड़ते हुए विश्वास !
ओ मेरे भाटा बनते हुए ज्वार !
तू रुक भी जा,
तू थम भी जा
अधूरी बात बाकी है !
अंधेरी रात बाकी है !

•

ओ मेरे उखड़ते हुए विश्वास !

मेरे देश की दम-तोड़ती
बहारों ने पुकारा है
अंधेरी गुफाओं में भटकती
रोशनी ने पुकारा है।

उधर सांपों की फौजों ने
मासूम कलियों को घेरा है
इधर हर नये बने कानून पर
दौलत का पहरा है

इच्छाओं को जड़ बनने देगा ?
प्यार के गीतों को मौन बना देगा ?
रंगीन बहारों को ऊसर बना देगा ?

क्या तू यों ही
बच्चों के होठों पर हँसी को सूखने देगा
इन्सानियत के बागों में गुण्डों को घूमने देगा ?
जनता की लाशों पर गिद्धों को घूमने देगा ?
ओ मेरे उमड़ते हुए निश्वास
ओ मेरे रोष बनते हुए ज्वालामुखी !
तू रुक भी जा
तू थम भी जा
अधूरी बात बाकी है ।
अधूरी रात बाकी है !

•

ओ मेरे उमड़ते हुए निश्वास !
क्या तू सिसकियाँ सुन सुन कर भी
यह समझता रहेगा
कि तुमने कुछ नहीं सुना ?
क्या तू अस्मता की चिता देखकर भी
यह सोचता रहेगा
कि तुमने कुछ नहीं देखा ?
क्या तू पराजय को हर सन्दर्भ से जुड़ा पाकर भी
यह मानता रहेगा
कि हमारा पराजय से कोई रिश्ता नहीं ?

क्या तू किरणों को कालिख लगने देगा ?
क्या तू चोर अँधेरे को

रोशनी को ठगने देगा ?
आखिर कितनी बार
आत्म प्रवंचनाओं को गले लगायेगा ?
आखिर कितनी बार
दिन के सफेद प्रकाश में
दूध धोये सत्य को झुठलायेगा ?
आखिर कितनी बार
इन कायर गलतफहमियों को
दुलारेगा दुहरायेगा ?

ओ मेरे उखड़ते हुए विश्वास !
ओ मेरे भाटा बनते हुए ज्वार !
तू रुक भी जा
तू थम भी जा
अधूरी बात बाकी है !
अँधेरी रात बाकी है !

•

ओ मेरे उमड़ते हुए विश्वास !

मेरे देश की रस-नाहती
बहारों ने पुकारा है
अँधेरी गुफाओं में भटकती
रोशनी ने पुकारा है।

उधर माया की फौजों ने
मासूम कलियों का घेरा है
इधर हर नये बने कानून पर
दौलत का पहरा है

मेरे इस देश में हर साधु में
एक शैतान का चेहरा है।

हर सुबह के पीछे पड़ी हुई
एक बेशरम दोपहर है
कि जिसका अंत सांझ है
आज हर नयी फसल
धान को जन्म देने के बाद भी
बांझ है।

ओ मेरे उखड़ते हुए विश्वास !
ओ मेरे थके हुए बादल !
तू रुक भी जा,
तू थम भी जा
अधूरी बात बाकी है,
अंधेरी रात बाकी है !

•

ओ मेरे उखड़ते हुए विश्वास !
मेरे इस देश में
हर बेईमान निगाह
ईमानदारी का चश्मा चढ़ाये है
मंजिल तक जाने वाली हर राह
शर्म से सिर झुकाये है
हर देवता के शीश पर
एक दैत्य अब आसन लगाये है !
आज हर नारा बदनाम हो गया है
हर कोलाहल का अर्थ खो गया है
यह बूढ़ा समय

अगर झूठे वायदों को ढो गया है।
ओ मेरे उखड़ते हुए विश्वास !
ओ मेरे सिमटते हुए चाँद !
तू रुक भी जा,
तू थम भी जा,
अधूरी बात बाकी है,
अंधेरी रात बाकी है
अभी तू रुक !
अभी तू थम !



अंतिम पृष्ठ

सशब्द आभार

- जीवत कवि स्वतन्त्रता समीर तथा 'माध्यम' के यशस्वी सम्पादक बालकृष्ण राव के प्रति प्रारम्भ के लिए।

- कवि और गीतकार रामनरेश मानी के प्रति आवरण पृष्ठ और स्वरूप के लिए।

ग्र

ाहित्य]

ा) में।

ात्मक लेख

भी।

ुछ सम्पर्नों

म ज्ञानोदय

आजकल

गप भारती

म रचनाए

वनत्र रूप म]

ं पर

य दृष्टि।